403

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

भा. पु.
पा. क. वि. ब.

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

३७

143/4

वैदिक व्याकरण

महर्षि–पाणिनि–प्रज्ञा–अनुसन्धान केन्द्र
तिथी.......
पु०सं० 2420
भारती पुस्तकालय

लेखक—

डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय

एम० ए० पी-एच० डी०,

प्राध्यापक, संस्कृत विभाग :

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-२२१००१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

प्रकाशक—

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे),

पो० बाक्स नं० ६९

वाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

चतुर्थ संस्करण १९८२

मूल्य ५-००

अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के० ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन

पोस्ट बाक्स नं० १२९

वाराणसी २२१००१

मुद्रक—

श्रीजी मुद्रणालय

वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

THE
VIDYABHAWAN RASHTRABHASHA GRANTHAMALA
37

143/4

VEDIC VYAKARAN

(VEDIC GRAMMAR)

By
Dr. Umesh Chandra Pandey
M. A. Ph. D.
Lecturer in Sanskrit
University of Gorakhpur, Gorakhpur

2420

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

© CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(Oriental Booksellers & Publishers)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 69
VARANASI 221001

Fourth Edition
1982

Also can be had of
CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN
(Oriental Booksellers & Publishers)
K. 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 129
VARANASI 221001

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

समर्पित

परमादरणीय गुरुवर

डॉ० सूर्यकान्त

एम० ए०, एम० ओ० एल०, शास्त्री,

डी० फिल् (आक्सफोर्ड) डी० लिट्० (पंजाब)

(काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ तथा

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयों के भूतपूर्व

संस्कृत-विभागाध्यक्ष)

को

●

2420

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

तृतीय परिवर्द्धित संस्करण

'वैदिक व्याकरण' मेरी पहली रचना है। आज से दस वर्ष पूर्व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मैंने अध्यापन आरम्भ करते ही विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इस पुस्तक की रचना की थी। इस बीच इसके दो संस्करण समाप्त हो चुके हैं। प्रस्तुत तृतीय संस्करण पूर्णतः परिवर्द्धित और संशोधित है। इसमें कई अध्यायों को नये शिरे से लिखा गया है और विवेचन को और स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार पुस्तक की उपयोगिता पहले से भी अधिक बढ़ गयी है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए ही प्रस्तुत की गयी है और इस कारण यह सुतरां सीमाबद्ध है। निश्चय ही, इस पुस्तक से वैदिक व्याकरण का प्रकृष्ट अध्ययन करने वाले मनीषियों की जिज्ञासा की शान्ति नहीं हो सकती, किन्तु छात्रों के लिए यह और भी उपयोगी सिद्ध होगी, यही आशा है।

गोरखपुर
महाशिवरात्री'७२ ई०

—उमेशचन्द्र पाण्डेय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

दो शब्द

विश्वविद्यालयों के बी. ए. तथा एम. ए. कक्षाओं में वेद के अंश अनिवार्य रूप से पढ़ाये जाते हैं। वेद के व्याकरण पर भारतीय व्याकरण-ग्रन्थों के अतिरिक्त नवीन पद्धति पर अंग्रेजी माध्यम में लिखे गये मैक्डानल, ह्विटनी प्रभृति विद्वानों के ग्रन्थ उपलब्ध तो हैं, किन्तु प्रायः विद्यार्थियों को ये सुबोधगम्य नहीं होते। अधिकांश विद्यार्थी इनका सम्यक् उपयोग नहीं कर पाते हैं और न भरपूर लाभ ही उठा पाते हैं। हिन्दी माध्यम से वेद के व्याकरण को सरल सुबोध भाषा में स्पष्ट करने वाले ग्रन्थ का अब तक पूर्णतः अभाव ही है। बी० ए० तथा एम० ए० कक्षाओं में अनुभूत अपनी कठिनाइयों एवं अपने मित्रों के आग्रह से वैदिक व्याकरण के मुख्य अंशों को सरल एवं सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करने के ध्येय से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया गया है। भारतीय व्याकरण-ग्रन्थों—ऋग्वेदप्रातिशाख्य, सिद्धान्तकौमुदी वैदिक-प्रक्रिया के साथ साथ मैक्डानल प्रणीत वैदिक व्याकरण के आधार पर इस ग्रन्थ की योजना की गई है। परिणामतः, प्राचीन एवं नवीन पद्धतियों का एक सरल समन्वय उपस्थित करने का प्रयत्न किया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा एवं स्मरण के लिये सूत्रों को भी यथास्थान उद्धृत कर दिया गया है। अन्त में बी. ए. के विद्यार्थियों की सुविधा के लिये क्रियाओं के रूपों का एक लघुकोश भी दे दिया गया है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक वेद के पढ़ने वाले विद्यार्थियों (बी. ए., एम. ए. प्रथम वर्ष अनिवार्य वेद, एम. ए. फाइनल वेद ग्रूप) के लिये उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होगी। लेखक के परिश्रम की सफलता इसी पर आश्रित है।

मैं अपने उन मित्रों को किन शब्दों में धन्यवाद दूँ, जिन्होंने समय-समय पर मुझे प्रोत्साहन दिया, एवं इस प्रकार पुस्तक की रचना में मूल कारण बने। मुझे विश्वास है कि उनका प्रेम एवं उनको शुभकामनाएँ निरन्तर मेरे प्रति बनी रहेंगी। विशेषतः श्री कालिका पाण्डेय बी. ए. एवं श्री प्रभुनाथ पाठक एम. ए. (इतिहास) का मैं चिर आभारी रहूँगा जिन्होंने मुझे बराबर उत्साहित किया।

वाराणसी
महाशिवरात्रि '६१ ई०

—लेखक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

विषयानुक्रम

अध्याय १ : वर्ण-विचार : स्वर, व्यञ्जन, उच्चारण-स्थान, रिफित संज्ञा, नामिसंज्ञा, स्वरभक्ति, ळ तथा ळ्ह । १–

अध्याय २ : सन्धि : स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि, विसर्गसन्धि, नकार विकार, स् को ष् परिवर्तन । ५–२

अध्याय ३ : संज्ञा व सर्वनाम : प्रातिपदिक के रूपों की विशेषताएँ। सर्वनाम शब्दों का वर्गीकरण तथा विशेष रूप । २३–२

अध्याय ४ : धातु रूप : 'मूड' या भाव । वर्त्तमान, लिट् लकार, Aorist या लुङ् लकार, भविष्यत् काल । णिजन्त, सन्नन्त, नाम धातु । ३०–४

अध्याय ५ : कृदन्त प्रत्यय ५०–५

अध्याय ६ : तद्धित प्रत्यय ५४–५

अध्याय ७ : क्रिया-विशेषण तथा अव्यय ५६–६

अध्याय ८ : स्वर तथा पद-पाठ के नियम ६३–७

अनुक्रमणिका : धातुरूपों के उदाहरणों का संकलन ७३–७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

॥ श्रीः ॥

वैदिक व्याकरण

अध्याय १

वर्ण-विचार

वैदिक भाषा में कुल ५२ वर्ण हैं। इनमें १३ स्वर हैं और ३९ व्यञ्जन।

1. स्वर (Vowels)

स्वर दो प्रकार के होते हैं। ऋग्वेदप्रातिशाख्य नाम के ग्रन्थ में इन स्वरों को मानाक्षर तथा सन्ध्यक्षर नाम से दो वर्गों में विभक्त किया गया है।

(क) **समानाक्षर** (Monophthongs या Simple Vowels) ॡ ो सम्मिलित कर समानाक्षर ९ हैं—

अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ, ऌ

(ख) **सन्ध्यक्षर** (Diphthongs) ए, ओ, ऐ, औ। ये चारों स्वर दो वरों की सन्धि से उत्पन्न होते हैं अतः सन्ध्यक्षर कहलाते हैं।

अ + इ = ए। अ + उ = ओ। अ + ए = ऐ। अ + ओ = औ। सन्ध्यक्षरों ए, ओ को गुण स्वर और ऐ, औ को वृद्धि स्वर भी कहा जाता है।

2. व्यञ्जन (Consonants)

व्यञ्जनों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया गया है—

(क) कण्ठ्य (Gutturals) क् ख् ग् घ् ङ् (कवर्ग)

(ख) तालव्य (Palatals) च् छ् ज् झ् ञ् (चवर्ग)

(ग) मूर्धन्य (Cerebrals) ट् ठ् ड् ढ् ण्। ळ्, ळ्ह (टवर्ग)

(घ) दन्त्य (Dentals) त् थ् द् ध् न् (तवर्ग)

(ङ) ओष्ठ्य (Labials) प् फ् ब् भ् म् (पवर्ग)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

इन पाँच वर्गों के वर्णों को स्पर्श (Contact Sounds या mutes) कहते हैं।

(च) अन्तस्थ (Semivowels) य् र् ल् व्

(छ) ऊष्म (Breathings) श् ष् स् ह् अः ≍ क ≍ प

(ज) अनुस्वार (Pure nasal) 'अं' यह स्वर भी माना जाता है ('अनुस्वारो व्यञ्जनं वा स्वरो वा')

स्वरों के अन्तर्गत—समानाक्षरों में प्रथम, तृतीय, पञ्चम और सप्तम को अर्थात् अ, ऋ, इ, उ को ह्रस्व कहते हैं।

('ओजा ह्रस्वाः सप्तमान्ताः स्वराणाम्'—ऋक्प्रातिशाख्य) इनके अतिरिक्त को दीर्घ कहते हैं, अर्थात् आ, ॠ, ई, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ।

अक्षर—वेद के व्याकरण में स्वरों को अक्षर कहते हैं।

व्यञ्जनों के अन्तर्गत—क् से म् तक के स्पर्श व्यञ्जनों में—

(i) प्रत्येक वर्ग के प्रथम तथा द्वितीय वर्णों को अघोष कहते हैं, क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ (वर्गे वर्गे च प्रथमावघोषौ)।

(ii) प्रत्येक वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों को सोष्म (Aspirated) कहते हैं, ख घ, छ झ, ठ ढ, थ ध, फ भ (युग्मौ सोष्माणौ)।

(iii) प्रत्येक वर्ग के अन्त में आने वाले वर्णों को अनुनासिक कहते हैं। ङ् ञ् ण् न् म् (अनुनासिकोऽन्त्यः)। अं को मिलाकर आठ ऊष्मा वर्णों में ह को छोड़कर सभी अघोष होते हैं।

उच्चारण स्थान--

(i) कण्ठ उच्चारण स्थान वाले वर्ण हैं—अ, ह, अः (कुछ लोग ह, अः का उच्चारण स्थान उरस् मानते हैं "केचिदेता उरस्यौ")

(ii) जिह्वामूल—ऋ, ऌ, ≍ क तथा कवर्ग।

तालु—इ, ई, ए, ऐ, चवर्ग, य, श्।

मूर्धा—टवर्ग, ष्। (मूर्धन्यौ षकारटकारवर्गौ)।

दन्तमूल—तवर्ग (दन्तमूलीयस्तु तकारवर्गः)। स्, र्, ल्।

ओष्ठ—उ, ऊ, ओ, औ, पवर्ग, व्, ≍ प।

नासिका—अनुनासिक, अनुस्वार।

मात्रा—(Mora)

उच्चारण में लगने वाला समय मात्रा कहलाता है। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का काल होता है। (मात्रा ह्रस्वः)। अवग्रह के अन्तर का भी एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

मात्रा का काल होता है। दीर्घ स्वरों की दो मात्रा तथा प्लुत स्वरों की तीन मात्रा होती है। सभी व्यञ्जनों की आधी मात्रा होती है।

स्वर-भक्ति (Vowel-part)

स्वर के बाद र् हो और र् के बाद व्यञ्जन हो तो वह ऋकारवर्णा स्वरभक्ति होती है। स्वरभक्ति का उच्चारण व्यञ्जन से दीर्घकाल का होता है। स्वरभक्ति दो प्रकार की होती है—(१) द्राघीयसी (२) ह्रस्वा।

(१) द्राघीयसी—जब स्वर के बाद र् या ल् हो और उसके बाद श्, ष्, स्, ह् हो तो द्राघीयसी स्वरभक्ति होती है, जैसे 'यदद्य कर्हि चित्' में अ के बाद र् और र् के बाद ह् है। 'प्रत्यु अदर्शि' में अ, र्, श् है। द्राघीयसी स्वरभक्ति का उच्चारणकाल आधी मात्रा होता है।

(२) ह्रस्वा—स्वर के बाद र् या ल् हो और उसके बाद श्, ष्, स्, ह् को छोड़कर अन्य व्यञ्जन हो तो वह ह्रस्वा स्वरभक्ति होती है। 'ह्रस्वा स्वरभक्ति' आधी मात्रा की होती है। स्वरभक्ति पहले आये हुए स्वर का अंग होती है—('स्वरभक्तिः पूर्वभागक्षराङ्गम्')

रक्त संज्ञा—अनुनासिक वर्णों की रक्त संज्ञा होती है। जिन वर्णों को अनुनासिक कहा गया है, उन्हीं को रक्त वर्ण भी कहते हैं। ङ्, ञ्, ण्, न्, म्। (रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः)।

संयोग संज्ञा—दो या कई व्यञ्जनों का स्वर के व्यवधान के बिना एक साथ आना संयोग कहलाता है (संयोगस्तु व्यञ्जनसंनिपातः) जैसे 'आर्त्त्नी' में र्, त्, त्, न्, ये व्यञ्जन एक साथ आये हैं।

ळ् तथा ळ्ह—लौकिक संस्कृत व्यञ्जनों के अतिरिक्त वैदिक संस्कृत के ळ् तथा ळ्ह ये दो व्यञ्जन अधिक हैं। आचार्य वेदमित्र के अनुसार जब 'ड' दो स्वरों के बीच में आता है, तब ळ् हो जाता है। वही 'ड' यदि ऊष्मा से युक्त होकर 'ढ' हो और दो स्वरों के बीच में आया हो तो ळ्ह हो जाता है।

['द्वयोश्चास्य स्वरयोर्मध्यमेत्य
संपद्यते स डकारो ळकारः।
ळ्हकारतामेति स एव चास्य
ढकारः सन्नूष्मणा संप्रयुक्तः॥]

उदाहरण—इळा, सा ळ्हा।

नामि स्वर—ऋ से लेकर १० स्वरों को नामि कहा गया है, अर्थात् ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

नति (Cerebralization) ऋ, र्, ष्, के बाद न् हो तो न् को ण् हो जाता है। 'नृवाहणम्' में न् को ण् हो गया है नामि स्वर, र् या क् के बाद स् को ष् हो जाता है।

रिफित संज्ञा (Rhotacization)--विसर्ग को जहाँ र् होता है वहाँ रिफित संज्ञा होती है। ऐसे विसर्ग को रिफित विसर्ग कहते हैं। जब विसर्ग के ठीक पहले नामिसंज्ञक स्वर होते हैं तब वह रेफी कहलाता है।

(ऊष्मा रेफी पंचमो नामिपूर्वः') जैसे 'पूर्वीरहम्' में 'पूर्वीः' का विसर्ग रेफी है। इसके विषय में अनेक अपवाद के नियम हैं। रेफी से भिन्न प्रकार के विसर्ग को अरेफी या अरिफित विसर्जनीय कहते हैं।

प्रगृह्य संज्ञा--

(१) सम्बोधन के रूप के अन्त में आये हुए 'ओ' को प्रगृह्य कहते हैं। 'इन्दो' 'विष्णो' में ओ।

(२) यदि 'ओ' स्वयं एक पद के रूप में हो, तो उसे भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

(३) ई, ऊ, ए--ये तीन स्वर यदि द्विवचन के रूप के अन्त में हों तो प्रगृह्य होते हैं। जैसे इन्द्रावृहस्पती, इन्द्रवायू, 'द्वे विरूपे' में।

(४) इन तीनों में प्रथम दो स्वर अर्थात् ई, ऊ सप्तमी विभक्ति के रूप के अन्त में आये हों तो प्रगृह्य होते हैं।

'दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम्' में 'सरसी' का ई।

'सोममिन्द्र चमू सुतम्' में 'चमू' का ऊ।

(५) अस्मे, युष्मे, त्वे, अमी के अन्त में आये हुए स्वरों की प्रगृह्य संज्ञा होती है। किन्तु जब 'त्वे' अनुदात्त होता है तब प्रगृह्य स्वर नहीं होता।

(६) जब 'उ' इतिकरण से युक्त हो, रक्त अर्थात् अनुनासिक हो, अपृक्त अर्थात् अकेला हो और दीर्घ हो तो शाकल आचार्य के अनुसार प्रगृह्य होता है।

द्रष्टव्य – ऋक्प्रातिशाख्य १।६८--७५

ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः पदं चान्योऽपूर्वपदान्तगश्च।
षष्ठादयश्च द्विवचोन्तभाजस्त्रयो दीर्घाः साप्तमिकौ च पूर्वौ ॥
अस्मे युष्मे त्वे अमी च प्रगृह्या उपोत्तमं चानुदात्तं न पद्यम्।
उकारश्चेतिकरणेन युक्तो रक्तो पृक्तो द्राघितः शाकलेन ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय २

सन्धि-प्रकरण

वैदिक भाषा में सन्धि के नियम प्राय: लौकिक भाषा के सन्धि-नियमों के समान ही हैं। इन सन्धियों के नाम लौकिक भाषा की सन्धियों से भिन्न हैं।

स्वर-सन्धि

१. प्रश्लिष्ट सन्धि (Contracted)

(१) दो समानाक्षरों (Monophthongs) की सन्धि होने पर वे समानाक्षर दीर्घ हो जाते हैं [समानाक्षरे सँस्थाने दीर्घमेकमुभे स्वरम्] अर्थात् अ इ उ ऋ ह्रस्व या दीर्घ के बाद अ इ उ ऋ ह्रस्व या दीर्घ आवे तो क्रमशः आ, ई, ऊ, ॠ होगा। यथा—

अश्व + अजनि = अश्वाजनि।
मधु + उदकम् = मधूदकम्।
इह + अस्ति = इहास्ति।
सु + उक्तम् = सूक्तम्।
स्रुचि + इव = स्रुचीव।

[लौकिक संस्कृत के 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र के अनुसार होने वाली सन्धि।]

(२) अ या आ के बाद जब इ या ई आवे तो दोनों मिलकर ए होंगे। जैसे आ + इन्द्रम् = एन्द्रम् (इकारोदय एकारमकारः सोदयः।]

(३) अ, आ के बाद उ, ऊ आवे तो दोनों के स्थान पर 'ओ' होता है (उकारोदय ओकारम्)। जैसे—एतायामोप (एतायाम + उप)। ऊपर की (२) और (३) सन्धियाँ लौकिक संस्कृत की 'आद्गुणः' सूत्र से होने वाली गुणसन्धि ही हैं।

(४) अ, आ के बाद जब सन्ध्यक्षर में पहला और तीसरा अर्थात्, ए या ऐ आवे तो दोनों मिलकर ऐ होंगे (परस्यैकारमोजयोः)। जैसे आ + एनम् = ऐनम्।

(५) अ, आ के बाद जब युग्म सन्ध्यक्षर अर्थात् ओ या औ आवें तो दो दोनों के स्थान पर 'औ' होगा [औकारं युग्मयोरेते प्रश्लिष्टा नाम सन्धयः]। उदाहरण—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

यत्र + ओषधी: = यत्रौषधी: । ऊपर की (४) और (५) सन्धियाँ 'वृद्धिरेचि' सूत्र से होने वाली वृद्धि सन्धि के समान ही होती हैं ।

२. क्षैप्र सन्धि (Hastened)

अकण्ठ्य समानाक्षर (Non-guttural Monophthogs) इ, उ, ऋ, ऌ तथा इनके दीर्घ स्वर के बाद जब असमान स्वर आवे तो ये अपने-अपने अन्तस्थ (Semivowel) अर्थात् य् व् र् ल् हो जाते हैं [समानाक्षरमन्तस्थां स्वामकण्ठ्यं स्वरोदयम्] । उदाहरण—अभ्यार्षेयम् = (अभि + आर्षेयम्), अधीन्वत्र = (अधीन्नु + अत्र) ।

लौकिक संस्कृत में यह नियम 'इको यणचि' सूत्र के अन्तर्गत आता है और इसे यण् आदेश सन्धि कहते हैं ।

३. अभिनिहित सन्धि (Absorbed)

(१) जब ए, ओ किसी पाद के अन्त में हों और उसके बाद पाद के आरम्भ में अ आवे तो वह अकार ए या ओ के साथ एक रूप हो जाता है और उसके स्थान पर अवग्रह होता है । (अथाभिनिहित: सन्धिरेतै: प्राकृतवैकृतै: । एकीभवति पादादिरकारस्तेऽत्र सन्धिजा: ॥

सूनवे + अग्ने = सूनवेऽग्ने ।
दाशुषे + अग्ने = दाशुषेऽग्ने ।
रथेभ्यो + अग्ने = रथेभ्योऽग्ने ।

(२) पाद के अन्तर्गत भी 'अ' अपने पूर्व आने वाले ए या ओ के साथ एक रूप हो जाता है, यदि इस 'अ' के बाद य या व आवे । [अन्त: पादमकाराच्चेत्संहितायां लघोर्लघु । यकाराद्यक्षरपरं पकाराद्यपि वा भवेत्] जैसे—सोऽयमागात्, तं पृच्छन्तोऽवरास:—में ।

(३) आवो, अये, अयो, अवे के बाद अ आवे और उसके बाद य, व के अतिरिक्त भी कोई व्यञ्जन आवे तो अ को पूर्वरूप होता है ।

[अन्याद्यापि तथायुक्त-मावोऽन्तोपहितात्सत: ।
अयेऽयोऽवेऽव इत्यन्तैरकार: सर्वथा भवन् ॥]

उदाहरण—

गावो + अभित: = गावोऽभित: ।
अजीतये + अहतये = अजीतयेऽहतये ।
अञ्जयो + अरुणयो = अञ्जयोऽरुणयो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

पेदवे + अश्विना = पेदवेऽश्विना ।
सूनवे + अग्ने = सूनवेऽग्ने ।
पुरूरवो + अनु = पुरूरवोऽनु ।

(४) जब अ के पहले 'वो' आये और उस वो के पहले आ, न, प्र, क्व, चित्र, सविता, एव, क शब्द आवें तो 'अ' का पूर्वरूप होता है । [व इत्येतेन चा न प्र क्व चित्रः सवितैव कः । पदैरुपहितेनैतैः] ।

उदाहरण—आवोऽहं । न वोऽश्वाः । प्रवोऽच्छा । क्व वोऽश्वा । चित्रोवोऽस्तु तत्सविता वोऽमृतत्वम् । अत्रैव वोऽपिनह्यामि । को वोऽन्तर्मरुत । 'पुत्रो', 'पराके', परावतो' के बाद आने वाले अन्य, अर्वाक, अथ के अकार का पररूप नहीं होता, [पितरं न पुत्रो अन्यः । यन्नासत्या पराके अर्वाके । अविवासन्यरावतो अथो ।]

'अभिनिहित सन्धि लौकिक संस्कृत में 'एङि पररूपम्' सूत्र से होने वाली पररूप संधि के समान है ।

४. भुग्न सन्धि

ओ औ के बाद जब अनोष्ठ्य स्वर अ, आ आवे तो ओ, औ का अ आ हो जाता है और इस अ, आ तथा अनौष्ठ्य स्वर के बीच 'व्' रख दिया जाता है । [ओष्ठ्ययोन्योर्भुग्नमनोष्ठ्ये वकारोऽत्रान्तरागमः] । 'वायो + आ = वाय् + ओ + आ = वाय् + अव् + आ = वाय् + अ + व् + आ = वायवा याहि दर्शत ।

५. उद्ग्राह सन्धि

ए और ओ के बाद जब कोई स्वर आवे तो ए और ओ के स्थान पर 'अ' होता है [ह्रस्वपूर्वस्तु सोकारं पूर्वौ चोपोत्तमात्स्वरौ । त-उद्ग्राहाः ।

जैसे—अग्ने + इन्द्र = अग्न इन्द्र ।
वायो + उक्थेभिः = वाय उक्थेभिः ।

६. उद्ग्राहपदवृत्ति

जब उद्ग्राह सन्धि की दशा में ए ओ के बाद कोई दीर्घ स्वर आवे तो उद्ग्राह पदवृत्ति होती है । [दीर्घपरा उद्ग्राहपदवृत्तयः ॥]—

जैसे—के + ईषते = क ईषते ।
तिरन्तो + आयु = तिरन्त आयु ।

७. पदवृत्ति

ऐ, औ के बाद कोई स्वर हो तो ऐ और औ के स्थान पर 'आ' हो जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अन्तवै + उ = अन्तवा उ

उभौ + उ = उभा उ

इसके अन्तर्गत विसर्ग को उपधासहित 'आ' करने का नियम भी आता है, जिसका विवेचन विसर्ग सन्धि के प्रकरण में होगा।

८. उद्ग्राहवत् सन्धि

अ, आ के बाद जब ऋ आवे तो अ, आ की जगह पर अ होता है [ऋकार उदये कण्ठ्यावकारं तदुद्ग्राहवत्]।

प्र + ऋभुभ्यः = प्र ऋभुभ्यः।

मधुना + ऋतस्य = मधुन ऋतस्य।

९. प्रगृहीतपद सन्धि

प्रकृतिभाव—सन्धि की दशा में भी सन्धि न होने को प्रकृतिभाव कहते हैं। प्रकृतिभाव का अर्थ है जैसा है वैसा ही रहना।

(१) प्रगृह्य स्वरों के बाद जब इति होता है वह ज्यों का त्यों रहता है। [ये प्रगृह्य हैं १—ओकारान्त सम्बोधन या 'ओ' जब स्वयं पद हो, किसी समास के पूर्व पद के अन्त में न आने वाला 'ओ' ('गोपति' के अतिरिक्त; द्विवचनान्त शब्दों के अन्त में आने वाले ई, ऊ, ए (यथा इन्द्राबृहस्पती, इन्द्रवायू, विरूपे)। सप्तमी के रूप में शब्द के अन्त में आने वाले ई, ऊ, (यथा सरसी शयानम्, सोममिन्द्र चमू सुतम् में), अस्मे, युष्मे, त्वे, अमी (समस्त पद में आने पर प्रगृह्य नहीं होता); इति के पहले आने वाला उ]।

इन प्रगृह्य स्वरों को प्रकृतिभाव होता है ("प्रकृत्येति करणादौ प्रगृह्याः, स्वरेषु चाष्यमि प्रथमो यथोक्तम्")।

उदाहरण—

ॐ इति। प्रो इति। इन्दो इति। इन्द्राग्नी इति। प्रो अयासीत्। इन्द्रवायू इमे सुता।

किन्तु त्र्यक्षरान्त (Three-syllabic) शब्दों के अन्त में आने वाले प्रगृह्य स्वरों के बाद जब 'इव' हो तो प्रकृतिभाव नहीं होता (त्र्यक्षरान्तस्तु नेवे), जैसे दम्पती + इव = दम्पतीव।

(२) सन्धि से उत्पन्न, उ के पहले यदि 'य्' हो और वह 'उ' प्रगृह्य हो तो प्रकृतिभाव होता है (प्रत्यु अदर्शि में प्रति + उ = प्रत्यु हुआ है। प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृतिभाव हुआ है)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(३) सु के बाद जब ऊ से प्रारम्भ होने वाला शब्द आवे प्रकृतिभाव होता है—ताभिरूषु ऊतिभिः ।

(४) श्रद्धा, सम्राज्ञी, सुशमी, स्वधोती, पृथुज्त्रयी, पृथिवी, ईषा, मनीषा, यया, निद्रा, ज्या, प्रपा, के बाद अ, इ, ई आने पर प्रकृतिभाव होता है ।

(५) सचा के बाद स्वर से प्रारम्भ होने वाले पाद के आने पर प्रकृतिभाव होता है । मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रः । सचाँ उद्यत् ।

(६) एकाक्षर पद 'आ' के बाद पाद को प्रारम्भ करने वाला स्वर और उस 'आ' के पहले 'सु' जोषम्, चर्षणी, चर्षणिभ्यः ए, अस्मत्, ईवत् ममस्यु आवे तो आ का प्रकृतिभाव होता है । इन सन्धियों—(५) और (६)—में प्रकृतिभाव होने पर आ पर अनुस्वार हो जाता है—जोषमाँ इन्द्रः, नदोष्वाँ उशन्तम् ।

(७) अ, आ के बाद ए, ओ हो तो लुशाद् ऋषि के अनुसार प्रकृतिभाव होता है ।

जैसे—ऋतस्यँ एकम् ।
उपस्थाँ एका ।
भरँ ओजः ।

(८) विभ्वा, विधर्ता, विपन्या, कदा, या माता—इन शब्दों के बाद ऋ हो, तो वह यदि पाद के आरम्भ में न भी हो तब भी प्रकृतिभाव होता है ।

विभ्वाँ ऋभुः ।
विधर्ताँ ऋतम् ।

(९) परुच्छेप ऋषि के मन्त्रों में भीषा, पथा के बाद 'अ' आने पर प्रभावित होता है ।

['परुच्छेपे भोषा पथेत्यकारे' ।]
भीषाँ अद्रिवः । पथाँ अनेहसा ।

(१०) अत्रि ऋषि के मन्त्रों में 'एवाँ अग्नि' पद प्रकृतिभाव होता है ।

'सचा' आदि का जो प्रकृतिभाव बताया गया है, उनकी उपधा को प्लुत होता है । और अनुनासिक कर देते हैं ।

['सचादयो या विहिता विवृत्तयः
प्लुतोपधान्ता अनुनासिकोपधाः ।]

१०. द्विसन्धि

प्रगृह्य संज्ञा होने पर जब किसी स्वर के दोनों ओर स्वर होते हैं तो उसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

'द्वसन्धि' कहते हैं, जैसे अभूदु भा उ अंशवे में प्रगृह्य उ के दोनों ओर क्रमशः आ और अ हैं।

गोतम ऋषि के मन्त्रों में 'अभिनन्त' पद का प्रकृतिभाव होता है इसके दोनों ओर सन्धि नहीं होती। 'सुपर्णा अभिनन्तँ एवै'।

११. विवृत्ति

दो स्वरों के बीच के व्यवधान को विवृत्ति (Hiatus) कहते हैं। ('स्वरान्तरं तु विवृत्तिः') जैसे 'नू इत्था' में ऊ, इ के बीच व्यवधान को विवृत्ति कहते हैं। इसका काल स्वरभक्ति के काल के बराबर होता है ('सा स्वरभक्ति-काला')। अन्तःपादविवृत्ति पाद के भीतर ही होती है। उदाहरण—पुर एता। तितउना। प्रउगम्। नमउक्तिभिः।

इसके अतिरिक्त दो पदों में अन्त और आदि के स्वर की सन्धि न होने पर विवृत्ति होती है। जैसे—श्रुत ऋषि। य औशिजः। प्र ऋभुभ्यः। प्रत्यु अदर्शि।

व्यञ्जन-सन्धि

१. अन्वक्षर सन्धि

(१) जब स्वर के बाद व्यञ्जन आता है तो इनकी सन्धि को अनुलोम अन्वक्षर सन्धि कहते हैं, उदाहरण ननि मिषति।

(२) जब इसके विपरीत व्यञ्जन पहले हो और स्वर बाद में तो इनकी सन्धि को प्रतिलोम अन्वक्षर सन्धि कहते हैं (प्रतिलोमास्तु विपर्यये त एव)।

इस सन्धि में वर्गों के पहले वर्ण को अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तित किया जाता है। (तत्र प्रथमास्तृतीयभावं प्रतिलोमेषु नियन्ति)।

'तमिन्द्रं दानमीमहे' में दानम्+ईमहे में व्यञ्जन पहले, स्वर बाद में होने से प्रतिलोम अन्वक्षर सन्धि कहेंगे 'अर्वागा वर्तया हरी' में अर्वाक के क् को तीसरा वर्ण 'ग्' हुआ है।

२. अवशंगम आस्थापित सन्धि

(१) जब स्पर्श वर्ण (Contact Sounds) क् से म् तक पहले आवें और उसके बाद कोई व्यञ्जन हो तो यह सन्धि अवशंगम आस्थापित कहलाती है और कोई परिवर्तन नहीं होता है। (स्पर्शाः पूर्वं व्यञ्जनान्युत्तराण्यास्थापितानावशंगमं तत्)।

उदाहरण—वषट् + ते = वषट्ते।
यत् + पत्ये = यत्पत्ये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

३. वशंगम आस्थापित सन्धि

(१) जब वर्ग:के पहले व्यञ्जनों के बाद घोष व्यञ्जन (Sonant Consonants)—(प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण और ह् य् व् र् ल्) आवें तो पहले व्यञ्जनों को उसी वर्ग का तीसरा कर देते हैं। (घोषवत्परा: प्रथमास्तृतीयान्स्वान्)

उदाहरण— यद् + वाक् + वदति = यद्वाग्वदति ।

षट् + भि: = षड्भि: ।

(२) वर्ग प्रथम व्यञ्जनों (क्, च्, ट्, त्, प्) को उसी वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन (क्रमशः ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) कर देते हैं, जब उनके बाद किसी वर्ग का पञ्चम वर्ण आवे। (उत्तमानूत्तमेषूदयेषु) ।

उदाहरण—अर्वाक् + नराः = अर्वाङ्नराः ।

तत् + नः = तन्नः ।

(३) श् = छ् । जब वर्ग के प्रथम व्यञ्जनों (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद श् आवे तो वह छ् हो जाता है। (सर्वैः प्रथमैरुपधीयमानः, शकारः शाकल्यपितुश्छकारम्) ।

विपाट् + शुतुद्री = विपाट्छुतुद्री ।

अर्वाक् + शफाविव = अर्वाक्छफाविव ।

(४) ह् = चौथा वर्ण । यदि वर्गों के प्रथम व्यञ्जनों के बाद ह् आवे, तो वह जिस वर्ग का प्रथम व्यञ्जन पहले आया है उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है, जब कि पहले आने वाले प्रथम वर्ण को तीसरा वर्ग कर दिया गया हो।

(पदान्तैस्तैरेव तृतीयभूतैस्तेषां चतुर्थानुदयो हकारः)

अवाट् + हव्यानि = अवाड्हव्यानि । अवाड्ढव्यानि । ('झयो होऽन्यतरस्याम्' सूत्रानुसार होने वाली सन्धि के समान है।)

(५) म् = वर्ग का अन्तिम वर्ण । 'म्' के बाद यदि उससे भिन्न स्थान वाला स्पर्श व्यञ्जन आवे तो 'म्' उस बाद में आने वाले स्पर्श व्यञ्जन के वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जायगा ।

[विस्थाने स्पर्श उदये मकारः सर्वेषामेवोदयस्योत्तमं स्वम्]

उदाहरण—

यम् + कुमारः = यङ्कुमारः ।

अहम् + च = अहञ्च ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(६) म् = अनुनासिक। यदि म् के वाद अन्तस्थ य्, व्, ल् आवे तो 'म्' को उसी अन्तस्थ का अनुनासिक रूप कर देते हैं।

उदाहरण—यम् + यम् + युजम् कृणुते =
यँय्यंय्युँजं कृणुते।
भद्रैषाम् + लक्ष्मीः = भद्रैषाँल्लक्ष्मीः।
तम् + वः तँव्वः।

[अन्तस्थासु रेफवर्जं परासु, तां तां पदादिष्वनुनासिकां तु]

(७) न=लँ, न के वाद जब ल आवे तो न को लँ कर देते हैं। जिगिवान् + लक्षमादत् = जिगिवाँल्लक्षमादत्।

(तथा नकार उदये लकारे)।

(८) न् = ञ्, न के वाद जब श और चवर्ग आवे तो न् को ञ् कर देते हैं।

['ञकारं शकारचकारवर्गयोः']

उदाहरण—वज्रिन् + श्नथिहि = वज्रिञ्छ्नथिहि।
आस्मान् + जगम्यात् = आस्माञ्जगम्यात्।
मघवन् + शग्धि = मघवञ् शग्धि =
मघवञ्छग्धि।

(९) त् = ज्, ल्। त् के वाद जब ज् या ल् आवे तो त् को ज् या ल् कर देते हैं। (तकारो जकारलकारयोस्तौ)।

उदाहरण—प्रयत् + जिगासि = प्रयज्जिगासि।
अज्ञात् + लोम्नः = अज्ञाल्लोम्नः।

(१०) त = च्। त् के वाद जब कोई अघोष तालव्य व्यञ्जन (च्, छ्,) आवे तो त् को च् होता है। (तालव्ये घोष उदये चकारम्)

तत् + चक्षुः तच्चक्षुः। यत् + छर्दिः = यच्छर्दिः।

(११) श् = छ्। ञ् और च् के वाद जब श् आवे तो श को छ् कर देते हैं। (छकारं तयोरुदयः शकारः)

वज्रिञ् + श्नथिहि = वज्रिञ्छ्नथिहि।
तत् + शंयोराः = तच्छंयोराः।

४. परिपन्न सन्धि

म् के वाद जब र् या ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह) आवे तो म् को अनुस्वार हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

जाता है। (रेफष्मोणोरुदययोर्मकारोऽनुस्वारं तत्परिपन्नमाहुः)

होतारम् + रत्नधातमम् = होतारंरत्नधातमम् ।

त्वाम् + ह = त्वांह ।

[सम्राट् शब्द इसका अपवाद है क्योंकि सम् + राट् = सम्राट् में म् को र् रहने पर भी अनुस्वार नहीं होता 'सम्राट् शब्दो परिपन्नापवादः'] ।

५. अन्तःपात सन्धि (वर्ण का आगम)

(१) क = का अन्तःपात—यदि 'ङ्' के बाद कोई अघोष ऊष्मवर्ण आवे, तो बीच में 'क्' का आगम होता है।

अर्वाङ् + शश्वतम् = अर्वाङ्क्छश्वतम् ।

प्रत्यङ् + स विश्वः, = प्रत्यङ्क्सविश्वः ।

अघोष वर्ण न होने पर 'दध्यङ् ह्' ही होगा।

(ङकारे घोषोष्म परेऽन्तरेके ककारम्) ।

(२) त् का अन्तःपात—ट् और न् के बाद जब स् आवे तो बीच में त होता है।

(टकारनकारयोस्तु आहुः सकारोदययोस्तकारम्)

उदाहरण—अप्राट् + स = अप्राट्त्स ।

ताम् + सम् = तान्त्सम् ।

(३) च् का अन्तःपात—ञ् के बाद श् आवे तो दोनों के बीच 'च्' होता है। वज्रिञ् + श्नथिहि = वज्रिञ्च्छ्नथिहि ।

(ञकारे शकारपरे चकारम्)

विसर्ग-सन्धि

१. पदवृत्ति

(१) अरिफित (Unrhotacized) विसर्जनीय के पहले दीर्घ स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो तो विसर्जनीय को उपधा के साथ 'आ' हो जाता है। (विसर्जनीयोऽरिफतो दीर्घपूर्वः स्वरोदयः आकारम्) ।

उदाहरण—याः + ओषधीः = या ओषधीः ।

२. उद्ग्राह सन्धि

जब अरिफित विसर्जनीय के पहले ह्रस्व स्वर हो और बाद में स्वर आवे तो विसर्जनीय को उपधासहित 'अ' हो जाता है। (ह्रस्वपूर्वस्तु सोऽकारम्) ।

उदाहरण—यः + इन्द्रः = य इन्द्रः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

३. नियत सन्धि

(१) यदि अरिफित विसर्जनीय के बाद घोष वर्ण आवे तो उपधा के साथ विसर्जनीय को 'आ' हो जाता है।

[विसर्जनीय आकारमरेफी घोषवत्पर:]

उदाहरण—पुनान: + यन्ति = पुनाना यन्ति ।

(२) यदि रिफित विसर्जनीय के बाद 'र' आवे तो रिफित विसर्जनीय के पहले वाले ह्रस्व को दीर्घ कर देंगे और विसर्ग का लोप हो जायगा। [रेफोदये लुप्यते । द्राघितोपधा ह्रस्वस्य]

उदाहरण—प्रात: + रत्नम् = प्राता रत्नम् ।

४. प्रश्रित सन्धि—

अरिफित विसर्जनीय के पहले यदि ह्रस्व स्वर हो और बाद में घोष व्यञ्जन आवे, तो विसर्ग अपने पूर्व के ह्रस्व स्वर के साथ 'ओ' हो जाता है। [ओकारं ह्रस्वपूर्व:]

उदा०—देव: + देवेभि: = देवो देवेभि: ।

५. रेफ सन्धि—

रिफित विसर्जनीय के पहले जब कोई स्वर हो और बाद को कोई स्वर या घोष व्यञ्जन हो, तो उस विसर्जनीय को 'र्' हो जाता है।

[सर्वोपधस्तु स्वरघोषवत्परो रेफं रेफेण पुना रेफसन्धय:]

उदा०—प्रात: + अग्निम् = प्रातरग्निम् ।
प्रात: + मित्रावरुणा = प्रातर्मित्रावरुणा: ।

६. अकाम सन्धि—

यदि रिफित विसर्ग के बाद 'र्' आवे तो विसर्ग का लोप हो जाता है। ['रेफोदये लुप्यते']

उदा०—अश्वा: + रथ: = अश्वा रथ: ।

७. व्यापन्न सन्धि—

(१) विसर्जनीय के बाद जब अघोष स्पर्श व्यञ्जन आवे और उसके बाद कोई ऊष्म वर्ण न हो तो विसर्ग उसी स्थान का ऊष्म वर्ण हो जाता है।

ऋषि: + को = ऋषि ᳵ को विप्र ।
य: + ककुभ: = य ᳵ ककुभो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अग्निः + च = अग्निश्च । देवाः + तम् = देवास्तम् । वायुः + पूषा = वायु ⏝ पूषा ।

[अघोषे रेफ्यरेफी चोष्माणं स्पर्श उत्तरे तत्सस्थानमनूष्मपरे ।]

(२) यदि विसर्जनीय के बाद अघोष ऊष्म वर्ण हो, तो विसर्ग को वही ऊष्म वर्ण हो जाता है । [तमेवोष्माणमूष्मणि]

उदा०—वः + शिवतमः = वश्शिवतमः ।

देवी + षळुर्वी = देवीष्षळुर्वी ।

(३) यदि प्रथम या पाँचवां वर्ग (कवर्ग एवं पवर्ग), अघोष स्पर्श व्यंजन बाद में हो तो विसर्ग ७ (i) के अनुसार ऊष्म वर्ण हो जाता है । यः + ककुभः = य ⏝ ककुभः । यः + पञ्च = य ⏝ पञ्च ।

[प्रथमोत्तमवर्गीये स्पर्शे वा]

(४) जब अमूर्धन्य ऊष्म वर्ण बाद को आवे तो विसर्ग को ७ (ii) के समान वही ऊष्म वर्ण हो जाता है । उदाहरण ७ (ii) के समान ।

[ऊष्मणि चानते]

८. विक्रान्त सन्धि

उपर्युक्त नियमों में ७ (१) एवं ७ (४) विकल्प से सन्धि होती है । जब विसर्ग ज्यों-का-त्यों रहता है तो विक्रान्त सन्धि होती है । यथा यः ककुभः । यः पञ्च एवं वः शिवतमो । देवोः षळुर्वी ।

९. अन्वक्षर वक्त्र—

यदि विसर्ग के बाद कोई अघोष ऊष्म वर्ण (Breathing) आवे और उस ऊष्म वर्ण के बाद अघोष व्यंजन हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; यदि वह ऊष्म वर्ण मूर्धन्य हो तो भी ।

[ऊष्मण्यघोषोदये लुप्यते परे नतेऽपि सोऽन्वक्षरसन्धिवक्त्रः ।]

उदा०—समुद्रः + स्थः = समुद्रस्थः ।

नि + ष्ठनिहि = निष्ठनिहि ।

१०. अव्यापत्ति (विसर्ग का परिवर्तन न होना)

यदि विसर्ग के बाद क्, ख्, प्, फ् आवे, तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों बना रहता है । यः कृन्तत । अगस्त्यः खनमानः । यः पञ्चचर्षणीरभिः । याः फलिनीर्या अफला । [अव्यापत्तिक खपफेषु वृत्तिः]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

११. विसर्गको रेफ

स्वः, धूः, पूः शब्द जब समस्त-पद में हों तो विसर्ग को र् हो जाता है। स्वर्यमा। धूर्षदम्। पूर्पतिम्।

[वृत्तिरेफं स्वधूः पूरघोषेष्ववग्रहे]

१२. उपाचरित (Sibilation)

विसर्ग का सकार में परिवर्तन—

(१) पाद के भीतर विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में 'पति' शब्द आवे तो विसर्ग को 'स्' हो जाता है।

ब्रह्मणः + पते = ब्रह्मणस्पते।
वाचः + पति = वाचस्पति।

(२) जब विसर्ग के बाद करं, कृतं, कृधि, करत्, क, शब्द आवें और विसर्ग से पहले 'अ' हो तो भी विसर्ग को स् होता है।

सहः + करम् = सहस्करम्।
णः + कृधि = णस्कृधि।
वयः + करत् = वयस्करत्।
शश्वतः + कः = शश्वतस्कः।

(३) अकारपूर्व विसर्ग के बाद पाद के अन्त में 'परि' आवे तो विसर्ग को स् हो जाता है। [तदुत्तानपदस्परि।]

(४) 'असः' से अन्त होने वाले शब्द के विसर्ग को स् होता है, जब उस शब्द में रकार न हो और पार, परि, कृतानि, करति शब्द बाद में आवें।

अपसः + पारे = अपसस्पारे।
तवसः + कृतानि = तवसस्कृतानि।
सुपेशसः + करति = सुपेशसस्करति।

(५) इसके अतिरिक्त 'वास्तो' के बाद 'पति' आने पर विसर्ग को स् हो जाता है।

(६) आविः, हविः, ज्योतिः के बाद क, पान्त और पश्यति आने पर विसर्ग को ष् हो जाता है।

आविः + कर्त = आविष्कर्त।
हविः + कृणु = हविष्कृणु।
ज्योतिः + कर्ता = ज्योतिष्कर्ता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

हविः + पान्तम् = हविष्पान्तम् ।
ज्योतिः + पश्यन्ति = ज्योतिष्पश्यन्ति ।

[आविर्हविर्ज्योतिरित्युत्तरश्चेत्ककारः अथो पान्तपश्यन्तिशब्दौ ।]

(६) इलायाः, गा, नमसः, देवयुः, द्रुहः, मातुः, हलः शब्दों के बाद 'पद' शब्द के आने पर, उपाचरित होता है । उपाचरित के विशेष शब्दों के लिये बताये गये नियमों एवं अपवादों की सूची विस्तार के भय से यहाँ नहीं दी जा सकती ।

न् के विकार

१. आन्पदापदवृत्ति—

(१) यदि शब्द के अन्त में न् और न् के पहले 'आ' हो और बाद में स्वर, हो तो न् का लोप हो जाता है और 'आ' अनुनासिक हो जाता है । [नकार आकारोपधः पद्यान्तोऽपि स्वरोदयः लुप्यते ।]

उदा०—महान् + इन्द्रः = महाँ इन्द्रः ।

(२) पद के अन्त में अव्रान्, जग्रसान्, जघन्वान्, देवहूनमान्, बद्धधानान्, इन्द्रसोमान्, तृषाणान्, नो देवदेवान्, हन्तदेवान्—इनके न् का लोप तथा 'आ' को अनुनासिक होता है ।

(३) पीवो अन्नाँ रयिवृधः । दधन्वाँ यो । जुजुर्वा य, खतवाँ यातु दद्घावेति उदाहरणों में नकार का लोप हो गया है ।

२. स्पर्शरेफ सन्धि—

न् = र् । न् के पहले जब ई, ऊ, हो, बाद में हतम्, योनौ, वचोभिः, यान्, युव, यून, वनिषीष्ट शब्द या कोई स्वर आवे तो न् को र् हो जाता है ।

उत्पणीन् + हतम् = उत्पणीँर्हतम् ।
दस्यून् + योनौ = दस्यूँर्योनौ ।
पणीन् + वचोभिः = पणीँर्वचोभिः ।
सखीन् + यान् = सखीँर्यान् ।
रश्मीन् + इव = रश्मीँरिव ।
वन्धून् + इमान् = बन्धूँरिमान् ।

'दस्यूँरेको' तथा 'नॄँरभि' इन दो उदाहरणों में भी 'न्' को 'र्' हो गया है । जब न् का लोप हो या न् को र् होता है, तब न् से पहले वाला स्वर अनुनासिक हो जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

[नकारस्य लोपरेफोष्मभावे पूर्वस्तत्स्थानादनुनासिकः परः ।]

३. स्पर्शोष्मरेफ सन्धि–

न्=विसर्जनीय के समान। 'न्' के पहले जब दीर्घ स्वर हो और बाद में चरित, चक्रे, चमसान्, च, चो, चित्, चरसि, च्यौत्नः, चतुरः, चिकित्वान्, शब्द हों तो न् को विसर्ग के समान समझना चाहिए।

महान् + चरति = महाँश्चरति ।
तान् + चक्रे = ताँश्चक्रे ।
तान् + ते = ताँस्ते ।
सर्वान् + तान् = सर्वाँस्तान् ।
देवान् + त्वम् = देवाँस्त्वम् ।
तान् + त्रायस्व = ताँस्त्रायस्व ।
अवदन् + त्वम् = अवदँस्त्वम् ।

किन्तु—अस्मान्, चमसान्, पशून् अपवाद हैं। न् का किसी भी प्रकार विकार होने पर उसके पूर्ववर्ती स्वर को अनुनासिक होता है।

शौद्धाक्षर सन्धि

१. श् का आगम—पुरु, पृथु, अधि के बाद यदि 'चन्द्र' शब्द आया हो, तो श् का अन्तःपात होता है।

पुरु + चन्द्र = पुरुश्चन्द्रम्
पृथु + चन्द्र = पृथुश्चन्द्रम्
अधि + चन्द्र = अधिश्चन्द्रम्

यदि चन्द्र शब्द किसी समास में उत्तरपद के रूप में आया हो और पूर्वपद के अन्त में ह्रस्व स्वर हो तो भी श् का अन्तःपात होता है—

हरि + चन्द्र = हरिश्चन्द्रः

[पुरुपृथ्वधिपूर्वेषु शकार उपजायते ।
ह्रस्वे च पूर्वपद्यान्ते चन्द्रशब्दे परेऽन्तरा ॥]

२. ष् का आगम—असमस्त पद में परि के बाद 'कृ' अने पर बीच में ष् होता है परिष्कृण्वन् ।

३. र् का आगम—समस्त पद के अन्त में 'वन' हो और उसके बाद 'सद्' शब्द आवे तो बीच में 'र' रखा जाता है।

वन + सदम् = वनर्षदम्

४. स् का अन्तःपात—'अ + कृत' की सन्धि में स् का अन्तःपात होता है। 'अस्कृतोषसम्'।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

ह्रस्व विधान

(१) मेधातिथि ऋषि के मन्त्रों में जिन समासों के अन्त में 'वरुण' या 'व्रत' शब्द होता है, उनके बाद यदि स्पर्श या अन्तस्थ वर्ण हो तो 'वरुणा' 'व्रता' के 'आ' को ह्रस्व कर दिया जाता है।

[मेधातिथौ वरुणान्तव्रतान्तौ स्पर्शान्तस्थात्प्रत्ययौ निह्र्सेते।]

उदाहरण—इन्द्रावरुणा + नू = इन्द्रावरुण नू।
इन्द्रावरुणा + याम्= इन्द्रावरुण याम्।
घृतव्रता + मित्रावरुणा = घृतव्रत मित्रावरुणा।

(२) मित्रा के बाद 'वयम्' शब्द आया हो, तो मित्रा के 'आ' को ह्रस्व कर देते हैं। [वयमित्यत्र मित्रा]

मित्रा + वयम् = मित्रवयम्।

(३) आदित्या देवा, वरुणा, असुरा के अन्तिम 'आ' को ह्रस्व कर देते हैं। यदि इन शब्दों के बाद या, सुप्रतीकम्, निष्कृतम्, पुरोहितिः, क्षत्रम्, दाशति, शवसा, भिषज्यथः शब्द हों।

[आदित्या देवा वरुणासुरेति येत्यादिषु]

उदाहरण—असुरा + या = असुर या।
देवा + निष्कृतम् = देव निष्कृतम्।
चक्षुर्वरुणा + सुप्रतीकम् = चक्षुर्वरुण सुप्रतीकम्।

नति या मूर्धन्य विधान

१. स् को ष् करने के नियम—

(१) एक ही शब्द में यदि स् के पहले 'ऐ' को छोड़कर दूसरे नामि स्वर हों (ऌ, ऋ, उ, ऊ, इ, ई, ए, ओ औ) तो स् को ष् हो जाता है, भले ही नामि स्वर के बाद ऊष्म वर्ण आया हो।

[अतः पादं नाम्युपधः सकारः षकारमप्यूष्मपरैर्यथोक्तम्। अन्यैरेकारात्]

उदा०—दुस् + स्वप्न्यम् = दुष्ष्वप्न्यम्।

(२) स् के पहले सु, ऊती, नकिः, स्वैः, वि, उरु, नहि, अभि, त्री, नि, हि आये तो स् को ष् हो जाता है।

उदाहरण—प्र सु ष विभ्यो।

(३) यदि दो अक्षर वाले किसी ऐसे शब्द के, जिसके अन्त में नामि स्वर हो, बाद में 'सत्' और 'स्थः' आये हों, तो इनके स् को ष् हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

दिवि + सद् = दिविषद् ।
दिवि + स्थः = दिविष्ठः ।

(४) सु के पहले अनेक अक्षरों वाले शब्द के अन्त में नामि स्वर हो, तो सु को षु हो जाता है । [स्वबह्वक्षरेण]

उदाहरण—मो ष्वद्य दुर्हणावान् ।

(५) यदि पद के आदि में स् हो और उसके बाद य्, क्, न्, हो, तो स् को ष् हो जाता है—

गोभिस् + स्याम = गोभिस् ष्याम = गोभिष्ष्याम
['पदादयश्च स्यित स्किति स्निति']

(६) रेफरहित पद में स् के बाद 'म्' आया हो, तो स् को ष् हो जाता है । न हि स्मा = नहि ष्मा । [अरेफस्य च स्मिति]

(७) एकारान्त नामि स्वर के बाद सु हो और उसके बाद 'नः' शब्द हो तो 'सु' को 'षु' हो जाता है । [एकारेणापि स्विति नः परं चेत्]

उदा०—'ते षु णो मरुतः' इसके अपवाद भी हैं ।

स् के पहले दीर्घ नामि स्वर हो और स् के बाद य् हो, तो स को ष् नहीं होता । (दीर्घो न स्थितिः) । उदा०—वीरैः स्याम । उ के बाद पद के आदि में 'स्य' हो तो स् को ष् नहीं होता । [उ च नास्यर्शपूर्वम्] उदा०—एष उ स्यः पुरुव्रतः ।

(८) नि, परि के बाद स्वर, सि आये हों तो स्व, सि के आदि में आये हुए स् को ष् हो जाता है, यदि स्व, सि के बाद चवर्ग हो ।

[नि परीति स्व सीत्यादि चकारवर्गीयोदयौ]

उदा०—नि + सिञ्च = नि षिञ्च ।

(९) नि, परि के बाद से, स, सी हो और उसके बाद द् भी हो या स्वर हो तो से, स, सी को मूर्धन्य हो जाता है ।

नि + सेदथुः = नि षेदथुः ।

[दकारे चोत्तरे परान्से स सीति स्वरोदये ।]

(१०) नि, परि के बाद सेध, स्नापय, सस्वजे, सस्वजाते, ससाद शब्द आवें तो इनके आदि स् को ष् हो जाता है ।

उदा०—वाचस्पते नि षेधमानः ।

(११) परि के बाद सन्तम्, सन्तः, सन्ति पूर्वी, स्थु, स्था, स्थात् के स् को ष् हो जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(१२) नामि स्वर से पहले र् या व् अन्तस्थ व्यञ्जन हो तो नामि स्वर के बाद आये स् को ष् हो जाता है, यदि अन्तस्थ से पहले दन्तमूलीय स् या तवर्ग हो।

[युग्मान्तस्थादन्तमूलीयपूर्वैरन्तः पदं नम्यतेऽन्तःपदस्थैः]

उदा०—त्रैष्टुभः।

(१३) यदि नामि स्वर के पहले कोई और भी व्यञ्जन हो, और नामि स्वर के बाद शब्द के आरम्भ में स् हो तो स् को ष् हो जाता है।

चमू सच्छयेन = चमू षच्छयेन।

[स् के मूर्धन्य होने के और भी विस्तृत नियम और उनके अपवाद ऋग्वेद-प्रातिशाख्य, पटल ५ में दिये गये हैं।]

२. तवर्ग को टवर्ग—

१. यदि तवर्ग के पहले एक ही पद में या भिन्न पद में ष् आया हो तो तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

[तकारवर्गस्तु टकारवर्गमन्तःपदस्थोऽपि षकारपूर्वः।]

उदा०—नि + स्थितः = निष्थितः = निष्ठितः।

२. जब दुर् शब्द को 'दू' कर दिया गया तब, उसके बाद ध्, न्, द् को मूर्धन्य हो जाता है।

[दूढयदूणाशदूळभप्रवादा दुर्दूभूतमक्षरं तेषु नन्तृ।]

दू + ध्य = दूढ्य। दू + नाश = दूणाशः।

दू + दभ = दूळभ।

३. न् को ण् करने के नियम—

(१) ऋ, र्, ष् के बाद एक ही पद में न् हो तो न् को ण् हो जाता है, यदि न् के पहले उसी पद में क् न आया हो।

उदा०—पितृयाणम्।

[ऋद्कारेफषकारा नकारं समानपदेऽवगृह्ये नमन्ति।
अन्तःपदस्थमककारपूर्वा अपि संध्या॥]

(२) सन्धि से उत्पन्न ऊष्म वर्ण के बाद दूसरे पद में भी न् हो तो उसे ण् हो जाता है। उदा०—अनुष्वणि।

(३) उस्रयाणे, अनुस्रयाणे, सुषाम्णे, वृषमण्यवः, अधिषवण्याः, प्रण्यः—इन शब्दों में न् को ण् हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(४) यदि र् और ष् के बाद न् हो और बीच में चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग का व्यवधान न हो, तब न् को ण् हो जाता है।

अपवाद—न् को ण् करने के नियम के कई अपवाद भी हैं, जैसे—

(१) ऋ, र्, ष् के बाद चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग आवे तो न् को ण् नहीं होता है। उदा०—'ऋजुना'।

['न मध्यमैः स्पर्शवर्गैर्व्यवेतम्']

(२) परि, प्र, ऋषि, इन्द्र शब्दों के बाद स्पर्श वर्गों में अन्तिम अर्थात् पवर्ग के वर्ण बीच में आये हों, तो न् को ण् नहीं होता।

उदाहरण—परिपानमन्ति।

[परिप्रऋषीन्द्रादिषु चोत्तमेन]

(३) ऋ, र, ष, के बाद श्, स् के व्यवधान के बाद न् हो तो उसे ण् नहीं होगा।

[तथा शकारसकारव्यवेतं सर्वादिषु]

अहन्नहि परिशयानमर्णः

(४) पूर्वपद के अन्त में न् हो, तो ऋ, र्, ष् के आने पर भी उसे ण् नहीं होता।

कर्मन् + कर्मन् = कर्मन्कर्मन्।

(५) नाभि, निर्णिक शब्दों के आदि न् को ऋ, र्, ष् के योग में भी ण नहीं होता।

(६) य् के साथ या स्पर्श वर्ण के साथ मिला हुआ न हो तो उसे ण् नहीं होता। उदा० 'हरिमन्युसायकः' में न्+य् के साथ संयुक्त है।

(७) 'भानुहिनोमि' के न् को ऋ् र् ष् के योग में भी ण नहीं होता। अपवाद के और भी उदाहरण हैं। सबका उल्लेख विस्तार के भय से यहाँ नहीं किया गया है।

———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय ३

संज्ञा और सर्वनाम के रूप

वैदिक संस्कृत में भी संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के रूप तीन लिङ्गों—पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग—में, तीन वचनों—एक वचन, द्विवचन तथा बहुवचन—में होते हैं। इसमें भी सम्बोधन के साथ आठ कारक विभक्तियाँ होती हैं। वैदिक संस्कृत में शब्दों के रूप में एक विशेषता यह है कि अनेक स्थलों पर एक ही विभक्ति में कई रूप होते हैं। शब्दों के रूप की प्रमुख विशेषताएँ यहाँ दी जा रही हैं—

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के—

(१) प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन के द्विवचन के रूप के अन्त में 'आ' या 'औ' होता है—प्रिया, प्रियौ ('प्रिय' शब्द के प्रथमा द्विवचन के रूप हैं)।

(२) प्रथमा और सम्बोधन के बहुवचन के अन्त में 'आः' और 'आसः' दोनों ही होते हैं, जैसे—प्रियाः, प्रियासः।

(३) तृतीया, एकवचन के अन्त में 'आ' या 'एन' होता है—प्रिया, प्रियेण।

(४) तृतीया, बहुवचन के अन्त में ऐः, एभिः होता है। प्रियैः, प्रियेभिः।

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के—

प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन के अन्त में 'आ' या 'आनि' होता है—प्रिया, प्रियाणि।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के—

(१) प्रथमा तथा संबोधन के बहुवचन के अन्त में 'आः' होता है और कभी-कभी 'आसः' भी होता है। जैसे प्रिया शब्द से प्रियाः प्रियासः।

(२) तृतीया एकवचन के अन्त में 'आ' होता है अथवा कोई विभक्ति-चिह्न नहीं होता—'प्रिया' शब्द से प्रिया, प्रियया।

इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के—

(१) तृतीया, एकवचन के अन्त में 'आ' ना होता है। जैसे 'शुचि' से १. शुच्या २. शुचिना रूप होंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(२) सप्तमी, एकवचन के अन्त में 'आ' या औ' होता है— शुचा, शुचौ ।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के—

(१) तृतीया, एकवचन के रूप के अन्त 'आ' होता है, अथवा कोई चिह्न नहीं होता । उदाहरण—शुच्या, शुचि, शुची ।

(२) चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी के एकवचन में पुल्लिग के समान ही रूप होते हैं ।

(३) चतुर्थी एकवचन में 'ऐ' और 'आः' भी पाया जाता है । भृत्यै, भृत्याः ऋग्वेद में ऐसे सात रूप चतुर्थी के मिलते हैं जिनके अन्त में 'ऐ' है ।

इकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के—

(१) प्रथमा, द्वितीया तथा सम्वोधन के द्विवचन के रूप के अन्त में 'ई' होता है । शुची ।

(२) प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के बहुवचन के रूप के अन्त में ई, ईनि अथवा कोई चिह्न नहीं होता—शुचि, शुचि, शुचीनि ।

(३) तृतीया एकवचन में केवल 'ना'—शुचिना ।

(४) चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी के एकवचन के रूप इकारान्त पुल्लिग शब्दों के समान होते हैं ।

ईकारान्त पुलिङ्ग शब्द के—

(१) प्रथमा एकवचन के अन्त में विसर्ग होता है—जैसे रथीः ।

(२) सम्बोधन के एक वचन में—रथि ।

(३) प्रथमा तथा द्वितीया द्विवचन—रथ्या ।

(४) चतुर्थी एक वचन—रथ्या । पंचमी एक वचन—रथ्ये । षष्ठी एक-वचन—रथ्याः ।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के—

(१) प्रथमा, द्वितीया, सम्बोधन के द्विवचन में कोई प्रत्यय नहीं रहता, जैसे 'देवी' ।

(२) प्र०, द्वि०, सम्बोधन के बहुवचन के अन्त में विसर्ग—देवीः ।

उकारान्त शब्द के—

(१) पुल्लिग में इकारान्त के समान ही रूप होता है । षष्ठी एकवचन में भिन्नता होती है जैसे मधु का मध्वोः, मध्वः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(२) पुंल्लिग, सप्तमी, एकवचन में दो रूप होते हैं। जैसे मघौ, मघवि।

(३) स्त्रीलिङ्ग में पुल्लिङ्ग के समान ही केवल तृतीया में 'आ' लग जाता है।—मघ्वा।

(४)चतुर्थी, प०, ष०, स० के एकवचन में दो रूप नहीं होते, जैसा कि लौकिक संस्कृत में होते हैं।

(५) नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा, द्वितीया, संबोधन के एकवचन में शब्द ज्यों-का-त्यों रहता है जैसे मधु।

(६) प्र० द्वि०, सम्बोधन के बहुवचन—मध्वी।

(७) प्र०, द्वि०, सम्बोधन के बहुवचन में तीन रूप होते हैं—मधू, मधु, मधूनि।

(८) चतुर्थी एक वचन में—मध्वे।

(९) पञ्चमी और षष्ठी एकवचन में 'मघ्वः' रूप भी पाया जाता है।

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—

(१) प्रथमा एकव०—तनूः। सम्बोधन एकव०—तनुः। प्रथमा, द्वितीया, द्विवचन –तनूः।

(२) द्वितीया—तन्वम्, तन्वा, तन्वः।

(३) तृतीया एकवचन—तन्वा। चतुर्थी एकवचन—तन्वे। पञ्चमी, षष्ठी एकवचन—तन्वः।

(४) सप्तमी एकवचन—तन्वि, तनू।

ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द—

प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन के द्विवचन में दो रूप जैसे—पितरा, पितरौ।

ओकारान्त पुंलिङ्ग शब्द—

(१) प्रथमा, द्वितीया के द्विवचन में—गावा, गावौ।

(२) षष्ठी के बहुवचन में दो रूप—गवाम्, गोनाम्।

अन्य नियम—

(१) श्री, ग्रामणी शब्दों के षष्ठी बहुवचन में—'नाम्' होता है। श्रीणाम्, ग्रामणीनाम् (श्रीग्रामण्योश्छन्दसि)।

(२) पाद के अन्त में 'गो' शब्द के षष्ठी, बहुवचन के अन्त में 'नाम्' आता है ('गोः पादान्ते')।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(३) षष्ठचन्त शब्द के बाद 'पति' का तृतीया एकवचन में 'पतिना' रूप होता है—'क्षेत्रस्य पतिना' ('षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा') ।

(४) मत् तथा वत् से अन्त होने वाले शब्दों का प्रथमा एकवचन में त् का रुत्व विसर्ग हो जाता है । भानुमत् का भानुमः । मरुत्वत् से मरुत्वः ।

विशेष नियम—

(१) किसी शब्द के किसी विभक्ति में प्रथमा एक वचन के रूप का प्रयोग हो सकता है । जैसे—"अनृक्षरा ऋजवः सन्तु पन्थाः" में 'पन्थानः' के स्थान पर 'पन्थाः' का प्रयोग हुआ है ।

(२) किसी मूल शब्द (Stem) या प्रातिपदिक का उसकी सप्तमी के एक-वचन में प्रयोग हो सकता है । 'चर्मणि' के स्थान पर 'चर्मन्' । इसी प्रकार 'धन्वन्' ।

(३) स्वरान्त शब्द के अन्तिम स्वर को दीर्घ कर तृतीया के स्थान पर भी प्रयोग होता है । जैसे—'धीतया' के स्थान पर 'धीती' । 'मत्या' के स्थान पर 'मती' ।

कारकों के विषय में विशेष नियम—

(१) 'हु' धातु का कर्म तृतीया या द्वितीया दोनों में होता है । ['तृतीया च होश्छन्दसि'] ।

(२) कभी-कभी चतुर्थी और षष्ठी का एक-दूसरे के अर्थ में प्रयोग होता है। अहल्यायै जारः = अहल्यायाः जारः । ['चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि' तथा 'षष्ठ्यर्थे चतुर्थी वक्तव्या' सूत्रों के अनुसार] ।

(३) 'यज्' धातु का करण षष्ठी और तृतीया दोनों में हो सकता है घृतस्य घृतेन वा यजते । ['यजेश्च करणे' सूत्र के अनुसार] ।

संख्यावाची शब्द

(१) 'एक' शब्द के पञ्चमी एकवचन में 'एकस्मात्' तथा 'एकात्' ।

(२) सप्तमी एकवचन में 'एकस्मिन्', 'एके' दो रूप होते हैं ।

(३) तिसृ, चतसृ के षष्ठी बहुवचन में तिसृणाम्, चतसृणाम् रूप भी विकल्प से होते हैं ।

सर्वनाम शब्द

१. पुरुषवाचक (Personal)—

अस्मद् और युष्मद् के रूपों में कुछ विशेषताएँ पायी जाती हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अस्मद्

प्रथमा—अहम् । वाम्, आवाम् । वयम् ।

द्वितीया—माम् । आवाम् । अस्मान् ।

चतुर्थी—मह्यम्, मह्य । बहुवचन—अस्मभ्यम् ।

सप्तमी—मयि । बहुवचन—अस्मासु—अस्मे ।

युष्मद्

प्रथमा—त्वम् । युवम् । यूयम् ।

द्वितीया—त्वाम् । युवाम् । युष्मान् ।

तृतीया—त्वा । त्वया । युवभ्याम्, युवाभ्याम् ।

पञ्चमी—त्वद् । द्विव०—युवद् । बहु०—युष्मद् ।

षष्ठी—द्विवचन—युवयो, युवयोः ।

सप्तमी—त्वे, त्वयि । बहुवचन—युष्मे ।

२. संकेतवाचक (Demonstrative)—

संकेतवाचक सर्वनाम के रूपों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं, जो 'तद्' या 'त' के रूप के उदाहरणों से स्पष्ट की जा सकती हैं—

(१) नपुंसकलिङ्ग प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन में म् के स्थान पर द् होता है—तद्, तद् ।

(२) पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग, शब्दों के चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी एकवचन में प्रातिपदिक के साथ 'स्म' जुड़ जाता है (तस्मै, तस्मात्, तस्मिन्) तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के च०, पं०, ष०, सप्तमी विभक्तियों में 'स्या' जुड़ जाता है (तस्यै, तस्याः, तस्याः, तस्याम्) ।

(३) सप्तमी में पुल्लिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग शब्दों के आगे 'इन' होता है, 'इ' नहीं । उदा०—तस्मिन्, सस्मिन् ।

(४) पुल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा बहुवचन के अन्त में 'ए' आता है, 'आस्' नहीं ।

इस प्रकार त या तद् के रूप में निम्नलिखित विभिन्नता होती है—

पुंल्लिङ्ग प्रथमा, द्वितीया, द्विव०, तौ ता । तृतीया बहुवचन-तेभिः । सप्तमी एकवचन—तस्मिन्, सस्मिन् । इसके अतिरिक्त दूसरे संकेतवाचक सर्वनाम हैं ।

१. एत् (यह)—एषः एतम् आदि ।

२. त्य (वह That) स्य, त्या, त्ये आदि ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

३. तक (इतना सा, this little) तकम्, तकद् ।

४. अयम् (यह, this here) इसका रूप दो प्रकार से चलता है । पुल्लिङ्ग में अयम्, इमा, इमौ, इमे इत्यादि । नपुंसकलिङ्ग में इदम्, इमे, इमा । स्त्रीलिङ्ग में—इयम्, इमे, इमा । स्त्री० तृतीया, एकव०—अया, अनया ।

५. अदस् (वह that, there) पुल्लिङ्ग, प्रथमा, एकव०—असौ । द्वितीया—अमुम् । तृतीया—अमुना । च०—अमुष्मै । ष०—अमुष्याः ।

नपुंसकलिङ्ग—अदः । बहुव०—अमू ।

६. एन (एनद्, वह, he, she, it) पुंल्लिङ्ग—द्वितीया—एनम्, एनौ, एनान्, स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया—एनाम्, एने, एनाः । नपुंसकलिङ्ग—एनद् । इसमें विशेष रूप षष्ठी द्विवचन में एनोः (एनयोः) ध्यान देने योग्य है ।

३. प्रश्नवाचक (Interrogative)—

'क' (कौन, क्या = who, which, what) का रूप 'तद्' के समान ही चलता है । केवल नपुंसकलिङ्ग में 'किम्' हो जाता है । दो वार समास में 'कद्' का भी प्रयोग हुआ है—कत्पय, कदर्थ । किम् के रूप में निम्नलिखित विभिन्नता होती है ।

१. पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, द्वितीया, द्विवचन—'कौ' ('का' नहीं) ।

२. नपुंसकलिङ्ग प्र०, द्वि० एकवचन—किम्, कद् ।

३. पुंल्लिङ्ग, नपुं०, तृतीया, बहुवचन—केभिः ।

४. सम्बन्धवाचक (Relative)—

'यद्' या 'य' (जो, who, which, what) के रूप 'तद्' या 'त' के रूप के समान ही होते हैं ।

५. निजवाचक (Reflexive)—

स्वयम्, तनू, आत्मन् तथा 'स्व' निजवाचक सर्वनाम हैं । 'स्व' का रूप सामान्य विशेषण शब्द (जैसे 'प्रिय') के समान चलता है ।

सप्तमी एकवचन—स्वे, स्वस्मिन् ।

स्त्रीलिङ्ग, षष्ठी एकवचन—स्वस्याः ।

६. अनिश्चयवाचक (Indefinite)—

१. सम (कोई, प्रत्येक any, every) के ६ रूप पाये जाते हैं—समम्, समस्मै, समस्मात्, समस्य, समस्मिन् । प्रथमा बहुवचन—समे ।

२. चन से बने सर्वनाम—कश्चन ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

३. चिद् से बने सर्वनाम—कश्चिद् ।

७. षष्ठचर्थ (Possessive)—

ममक, मामक, अस्माक, तावक, युष्माक । कहीं-कहीं 'स्व' भी षष्ठी के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

८. समस्त सर्वनाम—

कुछ सर्वनाम समास से भी बने हुए हैं । यथा—

१. दृश् से—कीदृश्, ईदृश्, तादृश्, यादृश्, एतादृश् ।

२. 'ति' से—कति, तति, यति ।

३. 'यन्त' से—इयन्त (इतना) । कियन्त (कितना) ।

४. 'वन्त' से—त्वावन्त (तुम्हारे समान) मावन्त (मेरे समान) । युवावन्त (तुम दोनों के प्रति श्रद्धालु), युष्मावन्त (तुम्हारा, तुमसे सम्बद्ध belonging to you.)

एतावन्त, तावन्त (इतना बड़ा so great)

यावन्त (जितना बड़ा, as great)

ईवन्त (इतना बड़ा, so great)

९. सार्वनामिक विशेषण—

कई सर्वनाम शब्दों से विशेषण भी बनाये जाते हैं । इनके रूप सर्वनाम शब्दों के समान चलते हैं । यथा—

अन्य = (other, दूसरा) तथा 'क', एवं 'य' से तर और तम लगाकर बने शब्द, (कतर, कतम, यतर, यतम) ।

विश्व (all सभी) सर्व (whole) एक (one) आंशिक रूप से सर्वनाम हैं और इनमें प्रथमा एवं द्वितीया के एकवचन में नपुंसकलिंग में 'द्' के स्थान पर 'म्' लगाया जाता है ।

र और म लगाकर बनने वाले विशेषण शब्द उत्तर higher, उत्तम highest इत्यादि ।

पूर्व (prior) एवं संख्या वाले, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, उभय, केवल इत्यादि सार्वनामिक विशेषण हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय ४

धातु रूप

(CONJUGATION)

वैदिक व्याकरण में क्रियाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(i) Finite Verb (प्रधानक्रिया) । तिङन्त क्रियारूप ।

(ii) Nomional Formations. (प्रत्ययों से वने रूप), जिसमें Infinitive, Participle और Gerund आते हैं ।

इसके अलावा Secondary Conjugation होते हैं—Desiderative (इच्छार्थक) Intensive (यङन्त) Causative (प्रेरणार्थक) Denominative (नामधातु) ।

क्रियाओं के दो वाच्य (Voices) होते हैं ।

(i) Active या कर्त्तृवाच्य ।

(ii) Middle या कर्मवाच्य जो वर्तमानकाल के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर Passive Voice के समान प्रयुक्त होता है ।

क्रियाओं के रूप तीनों वचनों, तीनों पुरुषों में होते हैं ।

Tenses या काल—पाश्चात्य विद्वानों ने सुविधा के लिये निम्न पाँच कालों (Tense) का विभाजन किया है ।

(i) Present (लट् लकार के समान)—वर्त्तमान काल ।

(ii) Imperfect (अनद्यतन भूत 'लङ्' के सदृश)—सामान्य भूतकाल ।

(iii) Perfect ('लिट्' लकार के समान)—पूर्ण भूतकाल ।

(iv) Aorist (जिसमें लुङ् लकार के रूप आते हैं)

(v) Future (भविष्यत् 'लृट्' लकार)

इनमें से Imperfect और Future के अतिरिक्त अन्य सभी कालों Present, Perfect और Aorist के रूप निम्नलिखित पाँच Moods में होते हैं—

(i) Indicative (द्योतकभाव)

(ii) Optative (विधिलिङ्)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(iii) Imperative (आज्ञा-लोट् लकार)
(iv) Subjunctive (लेट् लकार)
(v) Injunctive (विधिमूलक भाव) ।

Imperfect का कोई mood नहीं होता । इसका रूप 'लङ्' लकार (अपठत्, अपठताम्, अपठन्) सा होता है, अतः इसके विस्तृत नियमों को देने की आवश्यकता नहीं है । और इसी प्रकार Future में भी केवल एक Subjunctive रूप पाया जाता है 'करिष्याः' ।

इसके अलावा इन सबके Participles, Gerunds, Infinitives होते हैं । संक्षेप में Finite Verb के विभिन्न कालों में निम्नलिखित रूप आते हैं ।

(i) Present system :—Present tense और इसके पाँच moods, participle और आगम युक्त Imperfect tense.

(ii) Perfect system (लिट्) :—Perfect tense और इसके सभी moods, participle और 'अ' का आगम होने से बना Pluperfect.

(iii) Aorist system :—लुङ् Aorist tense, इसके moods एवं Participles (कृदन्त) ।

(iv) Future system :—future tense, कृदन्त, इसका आगम युक्त भूतकाल और Conditional रूप ।

क्रियाओं के रूपों को बनाने के लिये मूलधातु (Root) के अन्त में प्रत्यय लगते हैं ।

ACTIVE VOICE कर्तृवाच्य के प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

लट् लकार

प्र. पु.	ति	तः	(अ)न्ति
म. पु.	सि	थः	थ, थन
उ. पु.	मि,	वः	मः, मसि

लङ् लकार

प्र. पु.	त्,	ताम्,	अन् उः
म. पु.	स	तम्	त, तन
उ. पु.	म्	व	म

MIDDLE VOICE कर्मवाच्य में (आत्मनेपद)—

लट् लकार

प्र. पु.	ते,	एते, आते	अन्ते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

म. पु.	से	एथे, आथे	ध्वे
उ. पु.	ए	वहे	महे

लङ् लकार

प्र. पु.	त	एताम् आताम्,	अन्त
म. पु.	थाः	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	इ	वहि	महि ।

आगम (Augment)

(i) क्रिया रूपों के पहले 'अ' लगाया जाता है । यह 'अ' का आगम Imperfect, Pluperfect, Aorist और Conditional में लगता है और इससे भूतकाल का अर्थ बनता है । कभी-कभी इसकी वृद्धि कर दी जाती है और 'आ' हो जाता है । प्रायः न्, य्, र्, व् के पहले । आगम के बाद इ, उ, ऋ के आने पर इसकी वृद्धि भी हो जाती है (ऐ, औ, आर्) और प्रायः आगम लुप्त हो जाता है, विशेषकर Injunctive में ।

Subjunctive Mood :—इस Mood को हम 'लेट्' लकार कह सकते हैं जिसका प्रयोग केवल वेद में होता है । ऋग्वेद और अथर्ववेद में तो Subjunctive mood के रूपों की भरमार है । यह mood, Present Perfect और Aorist कालों में होता है और Indicative के रूप के पहले 'अ' लगाकर बनता है जो कभी-कभी 'आ' हो जाता है । इसके रूप Indicative की तरह ही चलते हैं और कभी-कभी इसमें Primary Ending पाया जाता है तो कभी Secondary । इसके निम्नलिखित प्रत्यय हैं ।

परस्मैपद

प्र. अ—ति, अ—त् ।	अ—तः ।	अ—न्
म. अ—सि, अ—स् ।	अ—थः ।	अ—थ
उ. आ—नि, आ ।	आ—व; ।	आ—म

आत्मनेपद

प्र. अ—ते, अ—तै ।	ऐते— ।	अन्ते अ—न्त
म. अ—से, अ—सै ।	ऐथे ।	अ—ध्वे, अ—ध्वै ।
उ. —ऐ ।	आ-वहै ।	आ महै, आ—महे ।

प्रयोग—Subjunctive mood की क्रियाओं का अर्थ होता है इच्छा (Will) और इसका अर्थ बहुत कुछ Optative विधिलिङ् के समान होता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

प्रथम पुरुष में वक्ता की इच्छा स्पष्ट होती है—स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै (कल्याण के लिये हम वायु का आह्वान करेंगे) मध्यमपुरुष में कुछ आज्ञार्थक भाव होता है—हनो वृत्रं जया अपः (वृत्र को मार अप् को जीतो) अन्य पुरुष में भी प्रायः यही अर्थ होता है। Subjunctive का प्रयोग (i) मुख्य वाक्य में (ii) प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रियाविशेषण 'कदा', 'कथा', 'कुविद्' के साथ। (iii) उपवाक्य के नकारात्मक अर्थ के साथ (iv) विशेषण उपवाक्य (Relative Clause) में अज्ञासूचक अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त, यद्, यत्र, यथा, यदा, यदि, याद् शब्दों के साथ भी इसका प्रयोग होता है और ऐसे स्थानों पर प्रायः अज्ञासूचक अर्थ होता है।

Injunctive Mood—इसके रूप आगमरहित भूतकाल के रूपों के समान होते हैं। ऋग्वेद में इसका प्रचुर प्रयोग है। इसके रूपों को Subjunctive के रूपों से भिन्न करना सरल कार्य नहीं। वड़े-बड़े विद्वानों के लिये भी यह मुश्किल कार्य है, इस वात को स्वयं मैक्डानल स्वीकार करता है (पृ० ३४९), गमत् Subjunctive भी हो सकता है Injunctive भी। इसका साधारण अर्थ, इच्छा (desire) होता है जिसके अन्तर्गत Sub लेट्, Opt. विधिलिङ् और Impe. लोट् के अर्थ भी आ जाते हैं। इसका प्रयोग मुख्य वाक्य में ही अधिक होता है और नकारात्मक अर्थ में तो केवल इसी Mood का ही प्रयोग होता है (न, मा के साथ) यद् और यदा के साथ इसका प्रयोग उपवाक्य भी होता है।

उत्तमपुरुष में केवल इच्छा व्यक्त होती है—'प्रवोचम्' (Will proclaim) मध्यमपुरुष में 'आज्ञा' अर्थ में 'सुगान सुपथा कृणु' (do thou make fair paths) इसी प्रकार अन्यपुरुष में भी 'स मां वेतु वषट्कृतिम्' (let him come to this Vasat call) इच्छा या आज्ञा व्यक्त होती है।

Optative Mood—इस mood को हम 'लिङ्' लकार के अन्तर्गत कह सकते हैं। इसका अर्थ होता है कामना (Wish) और इसका प्रयोग प्रार्थना request, के भी अर्थ में होता है। मुख्य वाक्य में प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रिया-विशेषण कथा, कदा, कुविद् के साथ (i) न, नु चित् के साथ नकारात्मक अर्थ में भी प्रयुक्त होता है Present, Perfect और Aorist में इसके रूप होते हैं। इसमें लगने वाले प्रत्यय secondary होते हैं। इसके प्रत्यय ये हैं—

Graded Conjugation—वृद्धियुक्त धातु—(जुहादि, स्वादि, क्र्यादि) से—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Active			Middle		
प्र. – यात्	– याताम्	– युः	–ईत	–ईयाताम्	ईरन्
म. – याः	– यातम्	– यात	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ. – याम्	– याव	– याम	ईय	ईवहि	ईमहि

A Conjugation (भ्वादि, तुदादि, दिवादि)

Active			Passive		
प्र. एत्	एताम्	एयुः	एत	एयाताम्	एरन्
म. एः	एतम्	एत	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उ. एयम्	एव	एम	एय	एवहि	एमहि

Precative भी Optative का एक रूप है। इसमें 'स', जोड़ा जाता है (भूयासम्) Conditional हेतुहेतुमद् को भी Optative का एक रूप ही समझना चाहिये।

Imperative Mood (लोट्)—इसका कोई अपना चिह्न नहीं है। उत्तम पुरुष Subj. तथा मध्यम एवं अन्यपुरुष पुराने Injunctive के रूप के समान होते हैं। केवल कुछ ही रूप शुद्ध हैं। इनके अन्त में, तम्, ताम्, त, अथाम्, आताम्, ध्वम्, तु, अन्तु, अन्ताम्। धि, हि, आन्, तात्, आम् इसके विशेष प्रत्यय हैं। इसका अर्थ आज्ञा, इच्छा, (desire), कामना (Wish) तथा प्रार्थना (request) होता है और इसका प्रयोग प्रायः वर्त्तमान काल में होता है। इसका प्रयोग कभी भी नकारात्मक अर्थ के साथ नहीं होता है और 'मा' के साथ तो इसका प्रयोग होता ही नहीं है।

1 PRESENT SYSTEM वर्त्तमान काल

इसके अन्तर्गत Indicative (द्योतक) Subjunctive, Injunctive optative विधि Imperative आज्ञा Participle तथा Imperfect आते हैं।

क्रियाओं के गणों को सुविधा के लिये दो वर्गों में बाँटा गया है—

(i) a-Conjugation में उन धातुओं का रूप आता है जिनमें मूल धातु (Stem) के अन्त में 'अ' आता हो; प्रथम, चतुर्थ और षष्ठ गण की धातुएं भ्वादि, दिवादि, तुदादि। इसमें भ्वादि गण में धातु के अन्त में 'अ' लगता है। तुदादिगण में भी धातु में 'अ' लगता है (तुदादिभ्यः शः) दिवादिगण में धातु के अन्त में 'य' लगता है (दिवादिभ्यः श्यन्) = दीव्य।

(ii) Graded Conjugation—शेष गणों के साथ होता है। इसमें या तो 'सिप्' प्रत्यय बिना किसी परिवर्तन के धातु में लगते हैं या जुहोत्यादिगण में गुण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

होता है (जुहोत्यादिभ्यः श्लुः 'श्लौ') जुहोमि, बिभर्मि । स्वादिगण में 'नो' जोड़ा जाता है ('स्वादिभ्यः श्नुः) कृणोमि । क्रयादि गण में 'ना' जोड़ा जाता है ('क्रयादिभ्यः श्ना')गृभ्णामि ।

Reduplication अभ्यास या द्वित्वीकरण—

निम्न स्थानों पर Reduplication होता है—

(i) जुहोत्यादिगण की धातुओं में जैसे—(बिभर्ति) (ii) Perfect tense (लिट्लकार में) (iii) Reduplicated Aorist में (iv) Desiderative, (v) Intensive.

इसके प्रमुख नियम ये हैं—

(i) धातु (Root) के पहले अक्षर (Syllable) को द्वित्व करते हैं—बुध्=बुबुध् ।

(ii) घोष व्यञ्जनों को सवर्ण अघोष होता है—भी = बिभी, धा = दधा ।

(iii) कण्ठ्य व्यञ्जनों को सवर्ण तालव्य होता है—गम = जगाम ।

(iv) यदि धातु के प्रारम्भ में संयुक्त व्यञ्जन हो तो पहले व्यञ्जन को द्वित्व होगा, क्रम = चक्रम ।

(v) यदि धातु 'स' से शुरू हो और उसके बाद कठोर व्यञ्जन हो तो कठोर व्यञ्जन का द्वित्व होगा । स्था = तस्थौ, स्कन्द = चस्कन्द ।

(vi) यदि पहले व्यञ्जन के साथ दीर्घ स्वर हो तो स्वर को ह्रस्व करते हैं, दा = ददा ।

(vii) जुहोत्यादिगण की धातुओं के साथ ऋ और ॠ के द्वित्व करने पर इ होता है, भृ = बिभर्ति । पॄ = पिपर्ति ('अर्तिपिपर्त्योश्च' सूत्र से) ।

वर्तमान काल में क्रिया में निम्नलिखित प्रत्यय (Terminations) लगते हैं—

1. Present Indicative (द्योतक भाव)

	Active (आत्मने)			Middle (परस्मै०)		
प्र.	ति	तः	(अ) न्ति	ते,	एते, आते	न्ते
म.	सि	थः	थ, थन	से	एथे, आथे	ध्वे
उ.	मि	वः	मः, मसि	ए	वहे	महे

2. Imperfect

प्र.	अ–त, अ–ताम् (अ) न्,	अ-त, अ-एताम्, आताम अ-न्त, अत
म.	अ–स् अ–तम् अ–त	अ-थाः अ-एथाम्, आथाम् अ-ध्वम्
उ.	अ–म् अ–आव अ–आम	अ-इ अ-वहि अ-महि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

3. Optative

प्र. ईत्, यात्	ईताम्, याताम्	ईयुः, युः	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म. ईस् यास्	ईतम् यातम्	ईत, यात	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ. ईयम्, याम्	ईव, यांव	ईम, याम	ईय	ईवहि	ईमहि

4. Subjunctive लेट् भाव

प्र. अ-ति, अ-त्,	अ-तः	अ-न	अ-तै, अ-तै,	ऐते,	अ-न्तै, अ-न्त
म. अ-सि, अ-स्,	अ-थः	अ-थ	अ-से, अ-सै,	ऐथे	अ-ध्वै
उ. आनि, आ,	आ-व	आ-म	ऐ	आ-वहै,	आ-महै, आ-महे

5. Imperative आज्ञामूलक भाव

प्र. तु,	ताम्	(अ) न्तु	ताम्, आम्	एताम्, आताम्	न्ताम्, अताम्
म. तात्, धि, हि	तम्	त, तन	स्व	एथाम्, आथम्	ध्वम्

'भू' धातु का रूप A Conjugation

Active Voice | Middle Voice

Indicative (द्योतक भाव)

प्र. भवति	भवतः	भवन्ति	भवते	भवेते	भवन्ते
म. भवसि	भवथः	भवथ	भवसे	(भवेथे)	भवध्वे
उ. भवामि	भवावः	भवामसि भवामः	भवे	भवावहे	भवामहे

Imperfect (लङ् भाव)

प्र. अभवत्	अभवताम्	अभवन्	अभवत	अभवेताम्	अभवन्त
म. अभवः	अभवतम्	अभवत	अभवथाः	अभवेथाम्	(अभवध्वम्)
उ. अभवम्	(अभवाव)	अभवाम	अभवे	(अभवावहि)	(अभवामहि)

Imperative (लोट् भाव)

प्र. भवतु	भवताम्	भवन्तु	भवताम्	भवेताम्	भवन्ताम्
म. भव, भवतात्	भवतम्	भवत	भवस्व	भवेथाम्	भवध्वम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Subjunctive (लेट् भाव)

प्र. भवाति, भवात्,	भवातः	भवान्	भवाते, भवातै ।	भवैते ।	भवान्ते
म. भवासि, भवाः,	भवाथः	भवाथ	भवासे, भवासै ।	भवैथे ।	(भवाध्वे)
उ. भवानि, भवा,	भवाव	भवाम	भवै ।	भवावहै ।	भवामहै

Optative (विधिमूलक भाव)

प्र. भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	भवेत	भवेयाताम्	भवेरन्
म. भवेः	(भवेतम्)	(भवेत)	(भवेथाः)	(भवेयाथाम्)	भवेध्वम्
उ. भवेयम्	(भवेव)	भवेम	भवेय	(भवेवहि)	(भवेमहि)

Participle

पु० भवन्त, स्त्री०—भवन्ती । पु० भवमान, स्त्री०—भवमाना

Second या Graded Conjugation का उदाहरण—

Active Voice — Middle Voice

'इ' जाना go — ब्रू speak बोलना

Present Indicative

प्र. एति	इतः	यन्ति	ब्रूते, ब्रुवे,	ब्रुवाते	ब्रुवते
म. एषि	इथः	इथ, इथन	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ. एमि	(इवः)	इमः इमसि	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

Imperfect

प्र. ऐत्	ऐताम्	आयन्	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म. ऐः	ऐतम्	ऐत, ऐतन	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ. आयम्,	(ऐव)	ऐम	अब्रुवि	:अब्रूवहि	:अब्रूमहि

Imperative

प्र. एतु	इताम्	यन्तु	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म. एहि, इतात्,	इतम्	इत, इतन	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्

Subjunctive

प्र. अयति अयत् ।	अयतः ।	अयन्	ब्रवते	ब्रवैते	ब्रवन्त
म. अयसि अयः ।	अयथः ।	अयथ	ब्रवसे	ब्रवैथे	ब्रवध्वे
उ. अयानि, अया ।	अयाव ।	अयाम	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Optative

प्र. इयात्	इयाताम्	इयुः	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवरन्
म. इयाः	इयातम्	इयात	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ. इयाम्	इयाव	इयाम	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

Participle

पु०—यान्त, स्त्री०—यान्ती। पु०—ब्रुवाण, स्त्री०—ब्रुवाणा

अन्य गणों की धातुओं का रूप चलाते समय वे-वे आगम तथा अभ्यास नियम होते हैं जिनका उल्लेख पीछे किया जा चुका है। यथा—

III भृ Act. बिभर्ति, बिभृतः बिभर्ति। Mid. बिभ्रे, बिभृते, बिभ्राते बिभ्रते।

V कृ = Act. कृणोति, कृणुतः कृण्वन्ति। Mid. कृण्वे, कृण्वाते कृण्वते।

VII युज् = Act. युनक्ति, युङ्क्तः युञ्जन्ति। Mid. युञ्जे, युञ्जाते, युञ्जते।

IX ग्रभ् = Act. गृभ्णाति, गृभ्णीतः गृभ्णन्ति। Mid गृभ्णीते गृभ्णाते, गृभ्णते।

Imperfect का रूप अनद्यतन भूत 'लङ्' लकार के समान जानना चाहिये। ऊपर इसके रूप दिये जा चुके हैं।

2. PERFECT SYSTEM लिट् लकार

इसके अन्तर्गत (i) Indicative, (ii) Optative, (iii) Imperative, (iv) Subjunctive, (v) Injunctive, पाँचों Moods तथा एक 'अ' के आगम (augment) से बना Pluperfect तथा participle होते हैं।

Perfect System में द्वित्वीकरण (Reduplication) के विशेष नियम होते हैं। द्वित्वीकरण के पिछले नियमों के अतिरिक्त निम्न नियमों का भी ध्यान रखना चाहिये—

(i) ऋ, ॠ और ऌ का द्वित्वीकरण 'अ' के साथ होता है कृ = चकृ, तृ = ततृ, क्लृप् = चक्लृप।

(ii) प्रारम्भ के अ या आ को 'आ' होता है, अन् = आन्, आप = आप्।

(iii) इ और उ से प्रारम्भ होने वाली धातु का क्रमशः ई, ऊ होता है, इ = ईयिथ। उच् = ऊचिषे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(iv) य, व जिस धातु में हो उसके द्वित्वीकरण के साथ इ, उ भी होता है। त्यज् = तित्यज्। स्वप् = सुष्वप्।

Perfect में लगने वाले प्रत्यय (Eendings)

	Active			Middle		
प्र.	अ	अतुः	उः	ए	आते	रे
म.	थ	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
उ.	अ	(व)	म	ए	(वहे)	महे

नीचे कुछ धातुओं के रूपों का उदाहरण दिया जाता है—

तुद Strike

	Active			Middle		
प्र.	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः	तुतुदे	तुतुदाते	तुतुद्रे
म.	तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद	तुतुसे	तुतुदाथे	तुतुद्ध्वे
उ.	तुतोद	(तुतुद्व)	(तुतुद्म)	तुतुदे	तुतुद्वहे	तुतुद्महे

कृ do (**करना**)

प्र.	चकार	चक्रतुः	चक्रुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
म.	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
उ.	चकार	चकृव	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

इसी प्रकार से अन्य रूप समझे जा सकते हैं।

द्वित्वीकरण में दिश् (दिदेश) उच् (उवोच) में गुणक्रिया और नी (निनाय) श्रु (शुश्राव) कृ (चकार) में वृद्धिक्रिया हुई है। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी होता है।

Perfect लिट् के विभिन्न Moods के रूपों के उदाहरण

Subjunctive Active उ. पु० अञ्ज अनजा। बहुवचन—ततनाम।
म. पु० ततनः। बुबोधः पिप्रथः। जुजोषसि।
चिकितः। मुमुचः। द्विवचन—चिकेतथः,
जुजोषथ। बहुवचन—जुजोषथ।
प्र. पु० चिकेतत्। जघनत्। ततनत्। तुष्टवत्।
पिप्रयत्। दिदेशति। बुबोधति। मुमोचति।
मुमुचत्। विविदत्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Middle. प्र. ततपते, जुजोषते ।
Injunctive Act　प्र. दूधोत् । सुश्रोत् ।
म. शशाः ।
Mid. प्र. वहुवचन—ततनन्त ।
Optative—Active　प्र. अनाज्यात्; जगम्यात्, ववृत्यात्; बभूयात् ।
वहुवचन—ववृत्युः ।
म. बभूयाः, ववृत्याः । द्विवचन-जगम्यतम् ।
उ. आनश्याम्, जगम्याम्, रिरिच्याम् ।
बहुवचन ववृत्याम ।

Middle प्र. ववृतीत । म. वावृधीथाः । उ. ववृतीय-वहुवचन—ववृतीमहि ।

Imperative–Active, म. चिकिद्धि, दिदिग्धि, मुमुग्धि, शशाधि, बभूतु, मुमोक्तु । द्विवचन—मुमुक्तम्, ववृक्तम् । वहुवचन—दिदिष्टन, ववृतन ।

Middle—ववृत्स्व, बहुवचन—ववृध्वम् ।

Participle–Active, पप्तिवांस, जगन्वांस, ईजान ।

जगृभ्वांस्, जिगीवांस् (जि धातु से) तस्थिवांस् (स्था), बभूवांस्, वावृध्वांस्, ईयिवांस् ।

Middle Voice—आनजान (√अञ्ज्),
आनशान (√ अंश्), ईजान (√यज्)
ऊचान (√वच्), जग्मान (√गम्),
भेजान (√भज्) । येमान (√ यम्) ।

अड्युक्त लिट् Pluperfect

इसमें लिट् लकार के द्वित्वीकरण के पहले 'अ' लगता है ।

Act.—अयचक्षम्, अजग्रभम् । अमुमक्तम् । अवावशीताम् । अजगन्त ।

Mid.—अशुश्रवि, दिदिष्ट, अचक्रिरन् । अजग्मिरन् । अपेचिरन्, कभी-कभी 'अ' का लोप भी हो जाता है ।

3. AORIST SYSTEM (लुङ् लकार)

वेद में लुङ् लकार का अधिक प्रयोग है । पाश्चात्य विद्वानों ने इसे Aorist कहा है । इसके दो मुख्य भेद हैं—

(i) First Aorist या Sigmatic Aorist जिसमें 'स्' लगता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(ii) Second Aorist या Nonsigmatic Aorist जिसमें 'स्' नहीं लगता है।

First Aorist के निम्न चार भेद हैं—

(i) Sa Aorist, (ii) S Aorist, (iii) is Aorist, (iv) Sis Aorist.

Second Aorist के तीन भेद हैं—

(i) a Aorist, (ii) Root Aorist, (iii) Reduplicated Aorist.

अब इनका अलग-अलग संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जायगा।

FIRST AORIST

(i) sa form (स लुङ्)

धातु में 'स' जोड़ा जाता है। केवल १० धातुओं का sa form का रूप पाया जाता है। वे हैं—मृज्, यज्, वृज्, क्रुश्, मृश्, स्पृश्, द्विष, ग्रह, द्रुह, रुह। Indicative में द्विवचन के रूप नहीं होते और Middle Voice में केवल प्रथम पुरुष के एकवचन एवं बहुवचन का रूप पाया जाता है। धातु के पहले आने वाले 'अ' का कभी-कभी लोप भी हो जाता है। sa form के कुछ उदाहरण ये हैं—

Indicative–Act.

उ. अवृक्षम्। ब० व० अमृक्षाम्। अरुक्षाम्।

म. अद्रुक्षः। अधुक्षः।

प्र. अक्रुक्षत्, अधुक्षत्, अदुक्षत्। ब० व०—अधुक्षन्, दुक्षन्। Mid. प्र. अधुक्षत, ब० व० अमृक्षन्त।

Injunctive. Act. दिक्षत, पृक्षत। दुक्षः, मृक्षः Mid. दुक्षत, धुक्षत्। धुक्षन्त।

Imperative. Act. प्र. यक्षताम्। म. मृक्षतम्। Mid धुक्ष्व।

(ii) S form (स् लुङ्)

इससे सभी Moods तथा एक Participle होते हैं।

	Active			Middle		
	भृ			बुध्		
प्र.	अभार्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः	अबुद्ध	अभुत्साताम्	अभुत्सत
म.	अभार्	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट	अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अभुद्ध्वम्
उ.	अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म	अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Subjunctive

इस mood में गुण क्रिया होता है। यह प्राय: Active परस्मैपद में ही मिलता है।

Active			Middle		
प्र. स्तोषति, स्तोषत् ।	स्तोषतः ।	स्तोषन्	स्तोषते	—	स्तोषन्ते
म. स्तोषसि, स्तोषः ।	स्तोषथः ।	स्तोषथ	स्तोषसे	स्तोषाथे	—
उ. स्तोषाणि ।	— ।	स्तोषाम	स्तोषै	—	—

इन उदाहरणों में 'स्तु' के 'उ' को 'ओ' हो गया है।

Injunctive

इस mood में भी सभी रूपों के गुण क्रिया होती है—स्तोषम्, जेषम्, यूषम्, येषम्।

Optative,

एकवचन—दषीय (√दा—काटना)। भक्षीय (भज्, बाँटना)। मासीय (मन्, सोचना)। म. मांसीष्ठाः (मन्)। प्र० दर्शीष्ट। भक्षीत। रासीय (√रा, देना), साक्षीय, स्तृषीय (स्तृ—बिखेरना)।

द्विवचन—त्रासीथाम् (त्रा, बचाना)।

वहुवचन—भक्षीमहि। मंसीमहि। वंसीमहि। धुक्षिमहि। प्र. मांसीरत्।

Imperative

Active—नेष। पर्ष। द्विवचन—रासाथाम्। बहुवचन—रासन्तान्। Tiddle—म. साक्ष्व। प्र. रासताम्।

Participle (कृदन्त)

Active–दक्षत्, धसत्, सक्षत्। Middle—मन्दसान्, यमसान। वस् धातु के साथ स को त् होता है अवात्सीः अवात्।

(iii) is form (इष् लुङ्)

इसमें क्रिया के साथ is इष् जोड़ा जाता है। इस aorist के सभी moods होते हैं।

Indicative (द्योतक भाव)

क्रम्

Active परस्मै०			Middle आत्मने०
प्र. अक्रमीत्।	अक्रमिष्टम्।	अक्रमिषुः	अक्रमिष्ट अक्रमिषाताम् अक्रमिषत
म. अक्रमीः।	— ।	—	अक्रमिष्ठाः
उ. अक्रमिषम्।	— ।	अक्रमिष्म	अक्रमिषि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Subjunctive (लेट् भाव)

Active—प्र. ए.––दविषाणि । म. अविषः, कानिषः । प्र. कारिषत् बोधिषत् ।

Middle बहुवचन––याचिषामहे । प्र. सनिषन्त ।

Injunctive

Active—प्र. अशीत्, तारीत् । बहुवचन—जरिषुः । म. अवीः, तारीः, योधीः । द्विवचन––तरिष्टम्, मर्धिष्टम् । ब०—वधिष्ट, वधिष्टम् । उ. शसिसम् ।

Middle––राधिषि । म. मर्षिष्ण । प्र. पपिष्ट ।

Optative (विधिलिङ् भाव)

प्र. जनिषीष्ट । म. मोदिषीष्णः । उ. एधिषीय, तारिषीमहि ।

Imperative––चर, दस्, मद, स्वन् के पहले स्वर को दीर्घ कर देते हैं । ग्रभ––अग्रभीष्म, अग्रभीम्, वधीम् ।

(iv) Sis form (सिष् लुङ्)

केवल सात क्रियाओं के साथ लगता है जिनके अन्त में आ, न, म्, आते हैं— गा, ज्ञा, प्या, या, हा, वन्, रम् ।

Indicative––प्र. अयासिष्टाम्, अगासिषुः । म. अयासिष्ट ।
उ. अयासिषम् ।

Optative––म. यासिसीष्ठाः । उ. वंसिषीय, प्यासिषीमहि ।

Injunctive––प्र. हासिष्टाम्, हासिषुः । म. हासिष्टम्, हासिष्ट
उ. रसिषम् ।

SECOND AORIST

(i) a Aorist ('अ' लुङ्)

इसके रूप Imperfect (लङ् लकार) समान होते हैं, धातु में 'अ' जोड़ा जाता है ।

Indicative, Active अविदत्, अविदन् । म. अविदः, अविदत ।
उ. अविदम्, अविदाव, अविदाम ।
Middle अविदत्, अविदेताम्, अविदन्त ।
म. अविदथाः । उ. अविदे, अविदावहि, अविदामहि ।

Subjunctive Active विदाति विदात, विदातः विदायन् । विदासि,
(लेट्) विदा, विदाथः, विदाथ, विदाव, विदाम ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Middle विदाते । विदामहे ।

Injunctive, Active विदत्, विदन् । विदः । विदम् ।

Middle विदत, विदन्त । विदामहि ।

Optative, active विदेत् । विदेः । विदेयम्, विदेम ।

Middle विदेष्ट । विदेथ । विदेवहि ।

Imperative, active सद, सदतम्, सदत, सदतन । सदतु, सदताम्, सदन्तु ।

Middle सदध्वम्, सदन्ताम् ।

Participle तृपन्त, शुचन्त, गुहमान, शुचमान ।

(ii) ROOT AORIST (धातु लुङ्)

Indicative—आकारान्त धातु से Active अस्थात्, अस्थाताम्, अस्थुः । अस्थाः अस्थातम्, अस्थात । अस्थान्—अस्थाम ।

Middle अस्थित—अस्थिरन् । अस्थिथाः । अस्थिमहि ।

ऋकारान्त धातु कृ से Act. अकर्, अकर्ताम्, अक्रन् । अकर्, अकर्तम्, अकर्त, अकरन्—अकर्म ।

Middle अकृत—अकृताम्—अकृत । अकृथाः—अकृध्वम् । अक्रि—अकृवहि, अकृमहि ।

ऊकारान्त धातु भू से Act. अभूत्, अभूताम्, अभूवन् । अभूः, अभूतम्, अभूत, अभूतन । अभूवम्—अभूम ।

आगम की वृद्धियुक्त रूप—आनट, आवर, आवः ।

आगम के लोपयुक्त रूप—वर्क, स्कन्, अर्त ।

प्र. बहुवचन, Middle में रन् लगाकर बनने वाले रूप—अकृपरन्, अगृभ्रन्, अञ्जस्रन् । अदृक्षरन् । अपद्रन् । अबुध्नन् । अपुञ्जन्, अस्थिरन्, अस्पृध्रन् ।

रम्—लगाकर बनने वाले रूप—अदृश्रम् । अबुध्रम् । असृग्रम् ।

Subjunctive, Active—करति-करत, करतः, करन्ति-करन् । करसि-करः, करथः करा-कराणि—कराम ।

Middle—करते, करन्त । करसे । करामहै-करामहे ।

Injunctive, Active—एकवचन—भूत्, श्रेत्, नक्, नट् । जेः, भूः, भेः, धक्, (दघ्), रोक् । करम्, दर्शम्, भुवम्, भोजम्, । बहुवचन—प्र. भूवन्, व्रन्, क्रमुः दुः धु ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

उ. दध्म, भूम, होम । Middle—ए० व०—प्र. अर्त, अष्ट, विक्त, वृत ।

म. नुत्थाः मृथाः, मृष्ठाः, रिक्थाः ।

उ. नंशि बहुवचन—धीमहि ।

Optative–Act एकवचन प्र –भूयात् । म. अश्याः, ऋध्माः, गम्याः, ज्ञेयाः, भूयाः, उ—अश्याम्, वृज्याम्, देयाम् । बहुवचन प्र.—भूयात्, अश्युः, धेयुः उ.—अश्याम, ऋध्याम, क्रियाम, भूयाम Mid. प्र.—अरीत । उ.—अशीय, अशीमहि, इधीमहि, नशीमहि ।

Precative. एकवचन—अश्याः, गम्याः, दध्याः । द्वि० भूयास्त उ. भूयासम् क्रियास्म । Mid. पदीष्ट । मुचीष्ट ।

Imperative. Active. म. कृतम्, कर्तम्, गतम्, गन्तम्, दातम्, धाक्तम्, भूतम् । बहुवचन—गमन्तु, धान्तु, श्रुवन्तु ।

Middle—म. पु. कृष्व, धिष्व, युक्ष्व, यक्ष्व, रास्व, वस्व । बहुवचन—कृध्वम्, वोढवम् ।

Participle कृदन्त—Active ऋधन्त्, क्रन्त्, गमन्त्, स्थान्त् Middle अराण, इधान, क्राण, दृशान, बुधान, सुवान ।

(iii) Reduplicated Aorist (द्वित्वाङ् लुङ्)

अर्थ में प्रायः प्रेरणार्थक रूप के समान होता है । इसमें धातु के प्रथम अक्षर (Syllable) का द्वित्वीकरण होता है और उसके पहले 'अ' का आगम । आ, ऋ, ऌ के अभ्यास होने पर 'इ' होता है ।

Indicative—Act. अजीजनत्—अजीजनन् अजीजनः, अजीजनतम्, अजीजनत । अजीजनम् अजीजनाम ।

Mid. अजीजनत-अजीजनन्त । अजीजनध्वम् ।

Active. प्र. पु०—अचीक्लृपत्, अच्युच्यवत्, अदिद्युतत्, अबुबुधत्, अवीवशत् शिश्नथत्, बहुवचन—अवीवशन्, असीश्रसन्, असीषदन् म. अचिक्रन्द, अबूभुवः सिश्वप । उ. अनीनशम्, अचीकृषम्, अपिप्लवम्, अपीपरम् ।

Middle. प्र. अवीवरत, ब० व०—अवीवृधध्वम् । अवीभयन्त अवीवशन्त । असिष्यदन्त ।

Subjunctive–Act. चीक्लृपाति, पिस्पृशति, सीषधाति । तीतपासि । रारधा । ब० रीरमाम, सीषधाम ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Injunctive–Active. चुच्यवत्, दीधरत्, मीमयत्, सिष्वदत्, ब० व० रीरमन्, शूशुचन्, सीपयन्त । म. चिक्षिप: पिस्पृश: रीरध: उ. चुक्रुधम्, दीधरम् ।

Optative–Active. वोचेत्–वोचेयु: । वोचे:–वोचेतम् । वोचेयम्–वोचेम् Middle. उ. वोचेय । बहुवचन—प्र. चुच्यवीरत । उ. चुच्युवीमहि, वोचेमहि ।

Precative प्र. एकवचन, Middle रीरिषीष्ट ।

Imperative वोचतु—पू पुरन्तु, शिश्रथन्तु । वोचतात्, जिगृतम्, दिधृतम्, जिगृत, दिधृत, पप्तत, वोचत ।

PASSIVE AORIST (कर्मवाच्य लुङ्)

Present के अलावा Aorist में भी एक भेद Passive Voice में होता है। इसके उदाहरण हैं—अकारि । अवेदि, अवोधि, अदर्शि, अवाचि, अश्रायि, अश्रावि, अधायि । श्रावि, अजनि, जनि, अवहि जारयायि ।

2. FUTURE SYSTEM (लृट् लकार)

भविष्यत् Future का रूप धातु में 'स्य' या 'इष्य' जोड़कर बनता है । केवल ऋग्वेद में १६ धातुओं का भविष्यत् का रूप पाया जाता है ।

				Middle
प्र.	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति	करिष्यते
म.	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ	करिष्यसे
उ.	करिष्यामि	—[	करिष्याम: मसि	करिष्ये

Subjunctive.

केवल एक रूप, म, एकवचन act. करिष्या: ।

Participle करिष्यन्त, धक्ष्यन्त । Mid. यक्ष्माण, स्तविष्यमाण ।

Pariphrastic Future लुट् लकार, भवितास्मि भविता, भवितार: भवितास्महे ।

Conditional Future अभरिष्यत्, (would bear) ।

DERIVATIVE FORMS प्रक्रिया रूप

प्राथमिक क्रियाओं से बने निम्न रूप होते हैं—

(i) Causative (णिजन्त) या प्रेरणार्थक ।

(ii) Desiderative (सन्नन्त) या इच्छार्थक ।

(iii) Intensive of Frequentative (यङन्त)

(iv) Denominative (नामधातु) संज्ञाओं से बने रूप ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

CAUSATIVE [णिजन्त] प्रेरणार्थक

संहिता में २०० धातुओं का णिजन्त रूप बनता है। यह धातु में 'अय' जोड़कर बनता है। प्रथम स्वर इ, उ, ऋ, ऌ को गुण हो जाता है। [वेद्य (विद्), क्रोधय, (क्रुध्), आर्दय (अद्) कल्पय (क्लृप)] 'अ' को दीर्घ हो जाता है [आमय (अम्) कुछ स्थानों पर 'अ' को दीर्घ नहीं होता—गम, दस, ध्वन्, पत, मदा, रम धातु में]।

Subj. Imp. Inj. Imperfect Present Participle के रूपों का अधिक और Optative का कम प्रयोग है।

भविष्यत्काल में चार रूप होते हैं—दूष्यिष्यामि, धारयिष्यति, वासयिष्यते, वारयिष्यते।

लिट् (Perfect) में केवल एक रूप—गमयांचकार।

Reduplicated Aorist के ६ रूप।

इष् Aorist के तीन रूप (व्यथयिष् से बने) होते हैं।

Present Passive Participle भाज्यमान Perfect Pass. Part. धारिता, चोदित Gerund त्रययाय्य, पनयाय्य। Infinitive नाशयध्यै।

DESEDIRATIVES (सन्नन्त) इच्छार्थक

इसका प्रयोग इच्छा व्यक्त करने के लिए होता है (धातोः कर्मणः समानकर्तृकाद् इच्छायां वा) 'स' जोड़कर बनता है। 'स' का प्रयोग 'ई' के साथ नहीं होता। धातु अपरिवर्तित रहती है दा से दिदास, भी से बिभित्स, नी-निनीष। द्वित्वीकरण होता है। अन्त के इ, उ, को दीर्घ तथा ऋ को ईर् कर देते हैं। जिगीष, शुश्रूष, चिकीर्ष। गा, पा, हा, धा धातु के अन्त के 'आ' को ई, इ कर देते हैं—जिगीष, पिपीष, जिहीष, दिधीष।

इसके सभी रूप होते हैं :—

Present Indicative Act. विवासति, विवासतः, विवासन्ति। विवाससि, विवासथः। विवासामि–विवासामः।

Middle—विवासते–विवासन्ते। विवाससे। विवासे, विवासामहे।

Subjunctive Act. विवासात्, विवासान्। उ. विवासानि।

Injunctive Act. विवासत। Middle ब० विवासन्त।

Optative Act. विवासेत्। उ. विवासेयम्—विवासेम।

Middle उ. एकवचन—विवासेय।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Imperative Act. विवासतु, विवासताम्, विवासन्तु । विवास–विवासतात्, विवासतम्, विवासत ।

Imperfect अविवासत्, अविवासन् । अविवासः ।

Participle Act. विवासन्त । Middle विवासमान ।

INTENSIVE OR FREQUENTATIVE [यङन्त]

इसका प्रयोग किसी क्रिया के बार-बार होने का अर्थ बताने के लिये होता है । इसमें भी पहले अक्षर (Syllable) का द्वित्वीकरण (Reduplication) होता है । धातु में यङ् या य जोड़ा जाता है—विशेषकर आत्मनेपद में जिसे यङन्त कहते हैं ।

'य' का लोप भी होता है—परस्मैपद धातुओं में जिन्हें यङ् लुक् धातु कहते हैं ।

इसके निम्न प्रकार के रूप होते हैं :—

निज्–wash

Present Indicative

Active–नेनेक्ति, नेनेजीति, नेनेक्त, नेनिजति । नेनेक्षि-नेनिक्तथः । नेनिज्मि, नेनेजीमि—नेनिज्मः नेनिज्मसि ।

Middle नेनेक्ते, नेनिजते । नेनिजे ।

Subjunctive Act नेनिजानि । नेनिजः । नेनिजानि, नेनिजाव, नेनिजाम ।

Middle—नेनिजैते नेनिजन्त ।

Optative Act. वेविष्यात्, जागृयाम, जाग्रियाम् ।

Imperative जागर्तु, जागृरितु, जागृताम् । जागृहि, जागरीहि, जागृतव जागृतम्, जागृत ।

Imperfect अचाकशम्, अजागर, अदर्दर, अवरीवर, अजोवहीत् Middle अदेदिष्ट, अनन्नत, मर्मृजत ।

Participle चर्चूर्यमाण-नेनीयमान, मर्मृज्यमान ।

DENONIMATIVE [नामधातु के रूपे]

संज्ञा में 'क्यच्' जोड़कर बनता है । इसका अर्थ भी 'इच्छा रखने' का ही है । क्यच् के पहले अ आ-ई हो जाते हैं 'सुतीयति' इ, उ, दीर्घ होते हैं साधूयति ऋ को री होता है कत्रीयति । ओ, औ को अव, आव होता है । 'स' और 'अस्' भी कभी-कभी बीच में रखा जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

इसके निम्न रूप उदाहरणार्थ दिये जाते हैं—

Present. (वर्तमान काल)

Indicative-Act. नमस्यति नमस्यतः नमस्यन्ति । नमस्यसि, नमस्यथः नमस्यथ । नमस्यामि—नमस्यमसि, नमस्यामः ।

Middle नमस्यते, नमस्येते, नमस्यन्ते । नमस्यसे नमस्येथे । नमस्ये—नमस्यामहे ।

Subjunctive Act.—नमस्यात्, नमस्यातः नमस्यान् । नमस्याः । नमस्या Middle. नमस्याते । नमस्यासे ।

Injunctive–Act. नमस्य । नमस्कन् ।

Optative–Act. नमस्येत् । नमस्येः । नमस्येम Middle नमस्येत ।

Imperative Act. नमस्यतु, नमस्यताम् नमस्यन्तु । नमस्य, नमस्यतम् नमस्यत । Middle नमस्यस्व, नमस्यध्वम् । नमस्यन्ताम् ।

Participle– Act. नमस्यन्त Middle नमस्यमान ।

Imperfect–Act. अनमस्यत् अनमस्यताम् अनमस्यन् । अनमस्यः Middle. अनमस्यत, अनमस्यन्त । अनमस्येथाम् ।

—::—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय ५

कृदन्त

(Participle)

वैदिक भाषा के कृदन्त रूपों में भी कुछ विशेषताएँ पायी जाती हैं। कुछ प्रमुख कृदन्त रूपों के उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं—वर्तमानकालिक कृदन्त (Present Participle) परस्मैपद Active के अन्त में 'अत्' या 'अन्त्' लगता है, जो लौकिक भाषा के शतृ प्रत्यय के समान है। भवन्त, क्षिपन्त, अस्यन्त, दुहन्त, कृणवन्त, भिदन्त, प्रीणन्त।

जुहोत्यादि गण की धातुओं के साथ 'अन्त' के न् का लोप हो जाता है। उदा०—जुह्वत।

आत्मनेपद Middle में 'मान' प्रत्यय होता है।

उदा०—क्रियमाण, यजमान, ब्रुवाण।

Perfect Participle लिट् लकार के कृदन्त

Active में 'वांस' जोड़कर बनता है—चकृवांस, जघन्वांस, तस्तभ्वांस, तस्थिवांस, पप्तिवांस, इयिवांस। दश्वांस, विद्वांस, चिकित्वांस, ओकिवांस।

Midde में 'आन्' जोड़कर बनता है—आनजान, आनशान, आराण, ईजान, ऊचान। चक्राण। शशयान, शशमान।

कर्मवाच्य

Passive में 'त' या 'इत' जोड़कर बनता है—यात, जित, भीत, स्तुत, कृत, हूत, शिष्ट। ध्वन्, ध्वान्, शान्त, निन्दित, रक्षित, ग्रथित, उक्षित श्रथित (√श्रथ्)।

Future Participle भविष्यत्कालिक कृदन्त (कृत्य)

Active में 'अन्त' जोड़कर बनता है—भविष्यन्त, Future middle में 'मान' जोड़कर-यक्ष्यमाण।

Futute Passive में सात 'प्रत्यय' लगते हैं।

(१) 'य' देय, योध्य, इत्य, श्रुत्य, कृत्य। (२) 'आय्य' जोड़कर—पनाय्य, स्पृह्याय्य, पनापाय्य। (३) 'एन्य' जोड़कर—यसेन्य, युधेन्य, मर्मजेन्य (४)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

त्व, जोड़कर—कर्त्व (५) तव्य जोड़कर—जनितव्य (६) 'अनीय' जोड़कर—उपजीवनीय, आमन्त्रणीय (७) सेय्य-स्तुषेय्य।

GERUND (पूर्वकालिक क्रियारूप)

'त्वी' 'त्वा' 'त्वाय' जोड़कर Gerund बनता है—

१.'त्वी' जोड़कर जैसे—कृत्वी, गत्वी, भूत्वी, वृक्त्वी, जनित्वी, स्कमित्वी।

२. 'त्वा' जोड़कर—पीत्वा, भित्वा, भूत्वा, मित्वा, युक्त्वा, तृत्वा, श्रुत्वा, हत्वा, हित्वा।

३. 'त्वाय' जोड़कर—गत्वाय, जग्ध्वाय, दत्त्वाय, दृष्ट्वाय, युक्त्वाय, हत्वाय, हित्वाय।

४. जब क्रिया के साथ उपसर्ग हो तो 'या' या 'त्या' प्रत्यय होता है—अच्या, हस्तगृह्य, पादगृह्य, अभिजित्य, एत्या, आदत्या। आगत्य। विहत्य।

INFINITIVE (तुमर्थक प्रत्यय)

तुमर्थक प्रत्यय वस्तुतः धातुओं से बने संज्ञा शब्दों के चतुर्थी, द्वितीया, पञ्चमी, षष्ठी एवं सप्तमी के रूप हैं। चतुर्थी के पदों का ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में प्रचुर प्रयोग है। 'तुम्' प्रत्ययान्त Infinitive का तो ऋग्वेद में केवल पाँच बार ही प्रयोग है। Infinitive में सबसे प्रमुख है चतुर्थ्यन्त प्रत्यय Dative Infinitive।

Dative Infinitive (चतुर्थ्यन्त)

इसका सामान्य प्रत्यय 'ए' है जो आकारान्त धातु के साथ 'ऐ' हो जाता है यथा भुवे, परादै, नौ प्रकार के प्रत्ययों से बने धातुसंज्ञापदों से 'ए' प्रत्यय लगाकर Dative Infinitive बनता है—

(i) अस् प्रत्यान्त संज्ञा से—अबसे, चरसे, चक्षसे।
(ii) इ प्रत्ययान्त संज्ञा से—दृशये, महये, युधये।
(iii) ति प्रत्यान्त संज्ञा से—पीतये, सातये।
(iv) तु प्रत्ययान्त संज्ञा से—एतवे, ओतवे।
(v) 'तवा' प्रत्ययान्त संज्ञा से—एतवै, औतवै, गन्तवै।
(vi) 'ध्या' प्रत्ययान्त संज्ञा से—गमध्यै, पिबध्यै।
(vii) 'मन्' प्रत्ययान्त संज्ञा से—त्रामणे, दामने।
(viii) वन् प्रत्ययान्त संज्ञा से—दावने, धुर्वणे।
(ix) 'त्या' प्रत्ययान्त संज्ञा से—इत्यै।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Accusative Infinitive (द्वितीयान्त पद)

इसके दो प्रकार के प्रयोग होते हैं—

१. धातुज संज्ञा में 'अम्' जोड़कर—आरभम्, शुभम् ।

२. 'तु' प्रत्ययान्त संज्ञा में 'म्' जोड़कर–दातुम्, प्रष्टुम् ।

Ablative Genitive Infinitive (पञ्चम्यन्त षष्ठयन्त पद)

(i) अस् जोड़कर-सपृ'चः आतृदः ।

(ii) तोस् जोड़कर एतोः, गन्तोः, जनितोः, हन्तोः ।

Locative Infinitive (सप्तम्यन्त पद)

'ई' जोड़कर बनता है ।

(i) धातुज संज्ञा—बुद्धि, दृशि, संदृशि ।

(ii) सन् प्रत्ययान्त संज्ञा से—नेषणि, पर्षणि, तरीषणि, गृणीषणि ।

प्रातिपदिकार्थ कृदन्त

(Primary Nominal Suffixes)

कई कृत् प्रत्ययों द्वारा प्रातिपदिक बनाये जाते हैं। कुछ उदाहरण निम्न-लिखित हैं—

अ—भाग (भज्), मेघ (मिह्) सर्ग (सृज्), प्रिय (प्री) ।

अन्—उक्षन् (बैल), मूर्धन् (सिर), राजन् (राजा) ।

अन—भोजन (भुज), करण (कार्य, कृ), हवन (हु) ।

अना—जरणा (जृ + अना वृद्धावस्था), योषणा (स्त्री) ।

अनि—अरणि (लकड़ी), वर्तनि (मार्ग) ।

आ—निन्दा, जिगीषा, गमया ।

इ—कृषि, आजि, चक्रि ।

इस्—अर्चिस्, ज्योतिस्, आमिस्, बर्हिस् ।

उ—तनु, बाहु, पादु, हनु, जानु ।

उन—तरुण, धरुण, मिथुन ।

उस्—धनुस्, जयुस्, वनुस् ।

ऊ—तनू धनू ।

क—शुष्क, अत्क, श्लोक ।

त—तृष्ट, शीत, दूत, गर्त ।

ति—कीर्ति, इष्टि, राति (दान), दाति ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

तु—दातु, अक्तु, ऋतु।
तृ—गन्तृ, यजष्टृ, कर्त्तृ।
लु—कृलु, पीयलु, मादयिलु।
त्र—जैत्र, यजत्र, क्षेत्र, पात्र, वस्त्र।
त्रा—आष्ट्रा, मात्रा।
थ—गाथ, वृथ, रथ, हृथ।
था—काष्ठा, गाथा, नीथा।
न—उष्ण, कृष्ण, नग्न।
ना—तृष्णा, धेना, सेना, स्थूणा।
नि—योनि, पृष्णि, भूर्णि, अग्नि।
नु—क्षेप्णु, भानु, धेनु, सूनु।
म—शग्म, जिह्म, धर्म, इध्म।
मन्—अज्मन्, नामन्, भूमन्, शश्मन्, जानिमन्।
मि—जामि, रश्मि, भूमि, ऊर्मि।
मी—भूमी, लक्ष्मी, सूर्मी।
यु—यज्यु, शन्ध्यु, सह्यु, मन्यु।
र—पतर, अजिर, उग्र, गृध्र।
रि—भूरि, वध्रि, जसुरि, अंघ्रि।
रु—चारु, भीरु, पतरु, वन्दारु।
व—सर्व, पूर्व, पक्व, ध्रुव।
वन—कृत्वन्, यज्वन्, अध्वन्, ग्रावन्, पर्वन्।
स—गृत्स, पृक्ष, महिष, ऋजीष।
स्नु—जिष्णु, वधस्नु, चरिष्णु।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय ६

तद्धित प्रत्यय

(Secondary Nominal Suffixes)

तद्धित प्रत्यय प्रातिपदिक के साथ जोड़े जाते हैं और उनसे सम्बद्ध अर्थ बताते हैं। ये कई प्रकार के भावों को अभिव्यक्त करते हैं। वैदिक भाषा के प्रमुख तद्धित प्रत्यय तथा उनके कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं—

इसमें से अधिकांश प्रत्ययों से विशेषण शब्द बनते हैं—

अ मारुत, पार्थिव, दैव, मानव।
आ प्रिया, नवा, गता।
आनी इन्द्राणी, मुद्गलानी, ऊर्जानी।
आयन काण्वायन।
इ पौरुकुत्सि, सांवरणि, सारथि।
इन् अर्किन्, अर्चिन्, वर्मिन्, रेतिन्।
इय अभ्रिय, इन्द्रिय, समुद्रिय।
ई अदती, पृथ्वी, अवित्री, देवी।
ईन अर्वाचीन, विश्वजनीन।
ईय गृहमेधीय, पर्वतीय, आहवनीय।
एय आदितेय, पौरुषेय।
क अन्तक, दूरक, ममक, पादक।
तन सनातन, नूतन, सनत्न।
तम उत्तम, पुरुतम, शततम।
तर तवस्तर, रथीतर, उत्तर।
ता बन्धुता, वसुता, देवता।
ताति सर्वताति, ज्येष्ठताति।
त्य अमात्य, नित्य, अपत्य, निष्ट्य।
त्व मघवत्त्व, अमृतत्व।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

त्वन्	जनित्वन्, सखित्वन् ।
थ	कतिथ, चतुर्थ ।
नी	पत्नी, परुष्णी, एणी, अशिक्नी ।
भ	ऋषभ, वृषभ, गर्दभ, रासभ ।
म	अवम, मध्यम, नवम, दशम ।
मन्त	अशनिमन्त, क्रतुमन्त ।
मय	मृण्मय, मनस्मय ।
म्न	द्यु म्न, सुम्न ।
य	पशव्य, तुप्रय, आधिपत्य ।
र	अवर, धूम्र, रथिर ।
ल	कपिल, वृषल, बहुल ।
वत्	उद्वत्, निवत् ।
वन्	मघवन्, श्रुष्टीवन्, समद्वन् ।
वन्त	अश्वावन्त, अश्ववन्त, सखिवन्त; रोमण्वन्त, पयस्वन्त, मावन्त ।
विन्	उभयाविन्, अष्ट्राविन्, यशस्विन् ।
श	एतश, युवश, रोमश ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय ७

क्रिया-विशेषण तथा अव्यय

वैदिक भाषा में अनेक क्रिया-विशेषणों तथा अव्यय शब्दों का प्रयोग होता है, जो विभक्ति के अर्थ को अवधारित कर देते हैं। इनमें कुछ को छोड़कर अधिकांश में विभक्ति चिह्न नहीं होता।

१४ क्रिया-विशेषण शब्द ऐसे हैं, जिनका क्रिया से स्वतन्त्र रूप में व्यवहार होता है। इनका प्रयोग द्वितीया, सप्तमी और पञ्चमी के साथ होता है।

१. अछ (ओर towards), अति (beyond, पारकर), अनु (पीछे after), अभि (ओर towards), प्रति (against ओर), तिरः (पारकर across) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

२. चतुर्थी के योग में परि (चारों ओर) का प्रयोग होता है।

३. सप्तमी के योग में 'उप' (निकट), 'अपि', 'अधि', 'अन्तर' (बीच में), 'आ' (ऊपर, on, in, to, at), पुरः (आगे before) का प्रयोग होता है।

४. अव ('नीचे से' down from) के योग में पञ्चमी का प्रयोग होता है।

इन सबको Adverbial Preposition कहते हैं।

बहुत से निपात मूलतः क्रिया-विशेषण हैं, किन्तु उनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से विभक्तियों के साथ होता है।

द्वितीया के साथ—अधः (नीचे, below)

अन्तरा (बीच में, between)

अभितः (चारों ओर, around)

उपरि (ऊपर, परे, above, beyond)

परः (परे, beyond)

परितः (चारों ओर, around)

सनितुः (अतिरिक्त, apart from)

तृतीया के साथ–

सह, साकम्, सुमद्,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

स्मद् (साथ, with)
अव: (नीचे), पर: (बाहर)

पञ्चमी के साथ–

अध: (नीचे, below)
अव: (नीचे से, down from)
आरे (दूर, far, भिन्न, from,)
ऋते (बिना without)
पर: (apart from)
पुरा (पहले, before)
बहिर्धा (बाहर से, from out)
सनुत: (far from)

षष्ठी के साथ–पुरस्ताद् (सामने, in front of)

सप्तमी के साथ–सचा (साथ, with)

क्रिया-विशेषणों में विभक्तियाँ लगाकर भी निपात बनाते हैं।

१. प्रथमान्त–

प्रथमम् (पहले, firstly)
द्वितीयम् (दूसरे, secondly)

२. द्वितीयान्त–

भूय: (अधिक, more)
नाम (नाम से, by name)
रूपम् (रूप में, in form)
सत्यम् (वास्तव में, truly)
दूरम् (दूर, a long way of)
नित्यम् (निरन्तर, constantly)
नक्तम् (रात्रि में, by night)
सायम् (शाम को, in the evening)
पूर्वम् (पहले, formerly)
अग्रम् (आगे, to the front)

३. तृतीयान्त–

सहसा (बलपूर्वक, forcibly)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

नव्यसा (नये रूप में, anew)
एना (इस प्रकार, in this way)
अग्रेण (सामने, in front)
अक्तुभिः (रात को, by night)
दिवा (दिन में, by day)

४. चतुर्थ्यन्त--

अपराय (भविष्य के लिए, for the future)
वराय (इच्छानुसार, according to wish)

५. पञ्चम्यन्त--

आरात् (दूर से, from a distance)
आसात् (निकट से, from near)
अमात् (निकट से, from near)
आत् (तब, then)

तात् (thus), यात् (as far as), उत्तरात् (from the north), पश्चात् (पीछे से, from behind), सनात् (form of old), दूरात् (दूर से), साक्षात् (स्पष्ट रूप से)।

षष्ठी—अक्तोः (रात में), वस्तोः (प्रातःकाल में)।

सप्तमी—अग्रे (in front), अस्तमी के (at home), आके (near), आरे (दूर), ऋते (बिना), दूरे (दूर), अपरीषु (भविष्य में)

प्रत्यय लगाकर बने क्रिया-विशेषण--

(१) था से—अथा, इत्था, यथा, तथा, कथा, अन्यथा, विश्वथा, ऊर्ध्वथा, पूर्वथा, प्रत्नथा, ऋतुथा (नियमपूर्वक), नामथा (नाम से), एवथा (जैसे)।

(२) धा से—एकधा (अकेले), द्विधा (दो प्रकार से), कतिधा (कितने बार), पुरुधा (अनेक प्रकार से), बहुधा, विश्वधा, शश्वधा (बार-बार), प्रियधा (प्रेम से), मित्रधा (मित्रवत्), बहिर्धा (बाहर) अधा (तब), अद्धा (सत्य ही), सध्रा (साथ-साथ)।

(३) ह लगाकर—इह, कुह, विश्वह, विश्वाहा, समह।

(४) व लगाकर—इव, एव, इवम्।

(५) वत् लगाकर—मनुवत्, पुराणवत्, पूर्ववत्ः।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(६) शः लगाकर—शतशः, सहस्रशः, ऋतुशः (प्रत्येक ऋतु में), पर्वशः (जोड़-जोड़ पर) ।

(७) स् लगाकर-द्विस्, त्रिस्, अवः, अबः, अन्येद्युः ।

(८) तस् लगाकर—अतः (इसलिये), अमुतः (उस कारण से), इतः (यहाँ से), मत्तः (मुझ से), दक्षिणतः (दक्षिण से), हृत्तः (हृदय से), अभितः (चारों ओर), परितः ।

(९) तात् लगाकर—अधस्तात्, आरात्तात्, पश्चात्तात्, पुरस्तात्, प्राक्तात् ।

(१०) 'अस्' लगाकर—तिरः, परः, पुरः, सदिवः, सद्यः, श्वः, ह्यः, मिथः ।

(११) त्रा या त्र लगाकर—अत्र, अन्यत्र, विश्वत्र, अस्मत्रा, सत्रा, दक्षिणत्रा, पुरुत्रा, बहुत्रा, देवत्रा, मर्त्यत्रा, शयुत्रा ।

(१२) दा लगाकर— इदा, कदा, तदा, यदा, सदा, सर्वदा ।

(१३) 'दानीम्' लगाकर—तदानीम्, इदानीम्, विश्वदानीम् ।

अव्यय INDECLINABLES या PARTICLES

अङ्ग(just, only) पहले वाले शब्द पर जोर देता है ।

अत्र (here) कभी-कभी यद (when) के अर्थ में भी आता है ।

अथ—वाक्यों एवं उपवाक्यों को जोड़ता है (and) then, (and) so.

अथो (and, also, moreover) समुच्चयबोधक (Conjunctive Particle) है ।

अधः (then) के अर्थ में आता है ।

अपि (also, even) Emphatic Particles हैं, बाद वाले शब्द पर जोर देता है ।

अरम् (suitably) क्रिया-विशेषण है, कभी-कभी विशेषण भी होता है ।

अह (indeed) पहले आनेवाले शब्द पर जोर देता है । Emphatic Particle है ।

आ (each, every) यह भी emphatic अर्थ रखते हैं । आ दिवः–each day.

आद् (from या after that) समय के क्रम को बताता है ।

इति (thus) प्रायः किसी कथन के अन्त में आता है और क्रिया के पहले आता है ।

इत्था (so, truly) का कभी-कभी Adjective की तरह भी प्रयोग होता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

इद् (just, even) पहले आने वाले शब्द पर जोर देने वाले Emphatic Particles हैं।

इव (as, if, like) जिसके साथ तुलना की जाती है उसके बाद आते हैं ईम प्रायः संज्ञा के स्थान पर आता है—आगच्छन्ति ईमवसा।

उ (Enclitic Particle) है और प्रायः दीर्घ लिखा जाता है। क्रिया या सर्वनाम के साथ इसका प्रयोग होता है, कभी-कभी वाक्यों को भी जोड़ता है।

उत (and) प्रायः दो शब्दों को जोड़ता है। जब वाक्यों को जोड़ता है तो प्रारम्भ में आता है।

उतो (and, also) का भी प्रयोग वाक्यों को जोड़ने के लिये होता है।

एव (thus) वाक्य के प्रारम्भ में यह पहले वाले वाक्य की ओर संकेत करता है और Emphatic Particles के रूप में पहले आने वाले शब्द पर जोर देते हैं।

एवम् (thus) का प्रयोग ऋग्वेद में एक बार 'यथा' के अर्थ में हुआ है। —या एवं विद्यात्।

कम् (well) यह उदात्तयुक्त एवं उदात्तरहित भी होता है। यह चतुर्थी के अर्थ में तथा नु, सु, हि के बाद Enclitic Particle के रूप में आता है।

किम् (why) यह प्रश्नवाचक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है।

किल (indeed certainly) यह Emphatic Particles है।

कुविद् interrogative particle है और वाक्य के पहले आता है।

खलु (indeed) ऋग्वेद में केवल एक बार आया है Emphatic particle है—मित्रे, क्रणुध्वम् खलु।

घ Enclitic particle है पहले आने वाले शब्द पर जोर देता है।

च (and) समुच्चयबोधक अव्यय है, वाक्यों एवं शब्दों को जोड़ता है।

चन (not even) का प्रयोग प्रायः नकारात्मक अर्थ के बाद होता है

चित् (even, any, every, all) Enclitic Particles है, पहले आने वाले शब्द पर जोर देता है।

चेद् (if) का प्रयोग ऋग्वेद में केवल तीन बार present और Aorist के साथ हुआ है।

ततः (thence) का प्रयोग पञ्चमी (अपादान) के अर्थ में होता है।

तथा (so, thus) का प्रयोग 'एव' अर्थ में होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

तद् (then) यद् के साथ अर्थ पूरा करने लिये आता है।

तर्हि (at that time) यदा का अर्थ पूरा करने के लिये इसका प्रयोग होता है।

तस्माद् (therefore) यद् (because) के साथ इसका प्रयोग अथर्ववेद में होता है।

तु—यह Emphatic Particle के रूप में प्राय: प्रयुक्त होता है।

द्विता—यह पुराना तृतीया का रूप है जिसका अर्थ है doubly।

न—नकारात्मक अव्यय के रूप में एवं तुलना के रूप में 'इव' अर्थ में भी आता है।

नकि: (not anyone) यह नकारात्मक अर्थ को और पुष्ट करता है।

नकीम् (not at all) यह भी नकारात्मक अर्थ वाला क्रिया-विशेषण है।

ननु (by no means, never) इसका केवल दो बार प्रयोग मिलता है।

नहि—न और हि को मिलाकर बना है इसका अर्थ है for not।

नाम—का अर्थ होता है by name, यह क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है।

नु, नू (now, still, pray, ever, at all) के अर्थ में आते हैं।

नूनम् now के अर्थ में। कभी कभी प्रश्नवाचक अर्थ के साथ भी आता है।

नेद्—कभी Emphatic Particle और कभी अन्तिम उपवाक्य के प्रारम्भ में आता है।

मा—नकारात्मक अर्थ के लिये प्रयुक्त होता है।

माकि: (not any one, by no means) नकारात्मक अर्थ में (कोई नहीं) प्रयुक्त होता है।

माकीम्—यह नकारात्मक अर्थ को पुष्ट करने वाला Emphatic Particle है।

यत्र—जहाँ where तथा whither के अर्थ में आता है। इसके साथ 'तत्र' भी आता है।

यथा—'as' तथा 'so that' (जिससे) अर्थ में समुच्चयबोधक अव्यय है।

यद् (that) 'वह, जो' पिछले उपवाक्य के किसी शब्द की व्याख्या प्रस्तुत करने के लिये प्रयुक्त होता है।

यदा (when) के अर्थ में और कभी-कभी अवधारणार्थ as soon as (ज्यों ही) के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

यदि (if) कभी इसका अर्थ when होता है। कई कालों की क्रियाओं के साथ आता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

यात् (as far as, since) तथा (as long as) के अर्थ में (जहाँ तक) प्रयुक्त होता है।

यावत् (as far as, so long as) (जहाँ तक) के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

वा (And) (और) के अर्थ में 'च' के समान ही प्रयुक्त होने वाला Enclitic particle है।

वै (Truly, indeed) (निश्चय ही) का भी प्रचुर तथा विविध प्रयोग पाया जाता है।

सः—सम्वन्धवाचक सर्वनाम के पहले आता है।

सीम्—कीम् से सम्वन्धित Enclitic Particle है (अवधारणार्थ)।

सु, सू (well, thoroghly, fully) (अच्छी प्रकार) के अर्थ में क्रिया-विशेषण हैं।

स्म (just, specially) यह Enclitic और Emphatic Particle (अवधारणार्थ) है, जोर देने के लिए प्रयुक्त होता है।

स्विद् Encltic Particie वाक्य के पहले शब्द पर जोर देता है।

ह Enclitic Particle—प्रारम्भ के शब्द के वाद आता है।

हन्त—यह Interjection के रूप में प्रत्युक्त होता है।

हि (Since)—जोर देने वाला (अवधारणार्थं) निपात है।

विस्मयबोधक (Exclamatory) **अव्यय** (Particle)

बत (alas)

वट् (truly)

हन्त (come Subjunctive) लेट् लकार के साथ आता है।

हये (come) सम्बोधन के पहले आता है।

है (ho)

हिरुक्, हुरुक् (away, दूर)

चिश्चा (whiz) 'कृ' के साथ प्रयुक्त होता है।

फट् (crash)

फल् (splash !)

वाल् (dash !)

भुक् (bang !)

शल् (clap !)

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अध्याय ८

स्वर तथा पदपाठ

स्वर या Accent वैदिक संस्कृत की प्रमुख विशेषता है। स्वर (Accent) तीन प्रकार के हैं, जो उच्चारण पर निर्भर करते हैं।

(i) उदात्त (acute), (ii) अनुदात्त (grave), (iii) स्वरित (circumflex), ['उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च त्रयः स्वराः' ।]

ऋग्वेद में अनुदात्त अक्षर (Syllable) को नीचे बेड़ी रेखा का चिह्न लगाकर तथा स्वरित अक्षर को ऊपर खड़ी रेखा का चिह्न लगाकर व्यक्त करते हैं। उदात्त पर कोई चिह्न नहीं लगाया जाता है। संहिता पाठ में स्वरित के बाद यदि कई अनुदात्त हों तो केवल अन्तिम पर अनुदात्त चिह्न लगता है, बीच के स्वरों पर चिह्न नहीं लगता। उन्हें प्रचय कहते हैं। "स्वरितादनुदात्तानां परेषां प्रचयः स्वरः। उदात्तश्रुतितां यान्त्येकं द्वे वा बहुनि वा ॥"

—(ऋक्प्राति० पटल ३)

दूसरी संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के स्वराङ्कन की विधियों में अन्तर है।

पद में उदात्त स्वर

प्रायः प्रत्येक पद में एक उदात्त स्वर होता है। कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें दो उदात्त स्वर होते हैं। इसी प्रकार कुछ शब्दों में उदात्त का अभाव होता है और कुछ में स्वरित की प्रधानता होती है।

१. दो उदात्त वाले शब्द

(१) चतुर्थ्यन्त तुमर्थक प्रत्यय 'तवै' से बने शब्दों में—दो उदात्त स्वर होते हैं। उदाहरण—एतवै, पातवै, अपभर्तवै ।

(ii) वे समास से बने शब्द जिनके दोनों पद द्विवचनान्त हों—'मित्रा-वरुणा' ('त्रा' और 'व' पर) बृहस्पति में ('बृ' और 'प' पर)।

कुछ शब्दों पर उदात्त कभी नहीं होता है, वे हैं—

(i) एन, त्व, सम, मा, त्वा, मे, ते, नौ, वाम्, नः, वः, ईम्, सीम् ।

(ii) अव्यय—च, उ, वा, इव, घ, ह, चित्, भल, समहः, स्म, स्विद् ।

कुछ शब्द वाक्य या पाद में स्थिति के अनुसार उदात्तरहित (unaccented) होते हैं। उनके सभी स्वरों पर अनुदात्त चिह्न लगता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(१) सम्बोधन शब्द जब पाद के आरम्भ में न हो तो उसके सभी स्वर अनुदात्त हो जाते हैं। स जनास इन्द्रः में जनास में उदात्त स्वर नहीं है।

(२) मुख्य वाक्य की क्रिया जब वाक्य या पाद के आरम्भ में न हो तो उसके सभी स्वर अनुदात्त होते हैं। उदा०—वीर्याणि प्रवोचम्।

(३) अस्य—जब वाक्य या पाद के प्रारम्भ में न हो और जोर न देता हो।

(४) यथा—जब 'इव' के अर्थ में पाद के अन्त में आवे। तायवो यथा—

उदात्त कहाँ होता है ?

संज्ञा शब्दों के स्वर-चिह्न—

(१) असन्त संज्ञा शब्द में नपुंसकलिंग होने पर मूल शब्द पर और पुल्लिग शब्द होने पर 'प्रत्यय' पर। अपः ('अ' पर उदात्त है) कार्य। अपः (प के 'अ' पर) क्रियाशील।

(२) ईष्ठ प्रत्ययान्त में मूल शब्द पर उदात्त होता है। यजिष्ठा में 'य' पर। जब पहले कोई उपसर्ग आवे तो उपसर्ग पर उदात्त होता है। आगमिष्ठ में 'आ' पर।

(३) ईयास प्रत्ययान्त में मूलशब्द पर। जवीयांस में 'ज' पर। उपसर्ग लगने पर उपसर्ग पर अनुदात्त होता है। प्रतिच्यवीयांस में 'प्र' पर।

(४) 'मनन्त' में नपुंसकलिग में मूलशब्द पर। कर्मन् में 'क' पर तथा पुल्लिग में मन् पर (धर्मन् में 'म' पर) उदात्त होता है।

(५) इनन्त में इन पर उदात्त होता है। अश्विन् में 'वि' पर।

(६) तमान्त में मूलशब्द पर (अपवाद, पुरुतम, उत्तम, शश्वतम) पर संख्यावाची शब्द के साथ तम लगाने पर 'तम' के म पर उदात्त होता है शततम।

(७) 'मान्त' शब्दों में 'म' पर उदात्त होता है—अष्टम।

समासों (Compounds) **में** :—

(i) Iterative जिसमें एक ही शब्द की आवृत्ति हो उसमें पहले पद पर उदात्त होता है—अहरहः।

(ii) बहुव्रीहि में प्रथम पद पर ('बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्') राजपुत्र।

(iii) कर्मधारय में अन्त के पद पर, (प्रथमजा) किन्तु जब अन्त में 'त' प्रत्यय से बना पद हो या 'ति' से समाप्त होने वाला शब्द हो तो पहले पद पर उदात्त होगा, जैसे—शान्ति सधस्तुति।

(iv) सामान्य तत्पुरुष में अन्तिम पद पर—गोत्रभिद्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(v) जिन तत्पुरुष समासों का उत्तरपद 'पति' शब्द होता है उनमें दो उदात्त होते हैं जैसे—बृहस्पति अपांनपात्, नराशंस, शुनःशेप में दो उदात्त होते हैं।

(vi) द्वन्द्व समास के उत्तरपद पर उदात्त होता है—अहोरात्राणि ।

(vii) जिन द्वन्द्व समासों में देवताओं के नाम होते हैं और दोनों द्विवचनान्त होते हैं उनके दोनों पदों पर उदात्त होता है। जैसे—मित्रावरुणा। द्यावापृथिवी। ('देवता द्वन्द्वे च')

क्रियारूपों में (In Verbal formations)—

(i) आगम (Augment) 'अ' पर उदात्त होता है अभवत् ।

(ii) s और is Aorist में धातु पर उदात्त होता है—वंसि ।

(iii) Perfect के प्र० पु०, म० पु०, उ० पु० के Indicative तथा प्र० पु० Imperative एवं Subjunctive में धातु के पहले अक्षर पर उदात्त होता है। उदा० चकार।

(iv) Root Aorist, Subjunctive में प्रथम अक्षर पर—करत् भजते।

(v) s is Aorist में Subjunctive में धातु पर और Imperative और Optative में प्रत्यय पर उदात्त होता है।

(vii) A aorist में दूसरे अक्षर पर उदात्त होता है—विदात् ।

(viii) Sa Aorist का Imperative में प्रत्यय पर उदात्त होता है।

(ix) Future में 'स्य' प्रत्यय पर उदात्त होता है—इष्य। उदात्त बना रहता है।

(x) उपसर्ग के साथ Participle आने पर Participle का उदात्त बना रहता है।

(xi) Past Passive Participle किसी उपसर्ग के साथ आवे तो उस पर उदात्त नहीं होता, पर यदि उपसर्ग अलग हो तो होता है।

(xii) य, त्व, लगाकर बने Gerund में धातु पर उदात्त होता है।

(xiii) Dative Infinitive इ, ति, अः, वन् में प्रत्यय पर उदात्त होता है—पीतये। पर उपसर्ग के साथ होने पर 'धातु' पर उदात्त होता है—समिधे।

(xiv) मन् प्रत्ययान्त Dative Infinitive तथा अन्य Infinitives में धातु पर उदात्त होता है—दामने।

(xv) त्वी, त्वा, त्वाय से बने Gerund में प्रत्यय पर उदात्त होता है—भूत्वा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

वाक्य में (In Sentence)

(i) जब सम्बोधन शब्द वाक्य या पाद के प्रारम्भ में हो तो उदात्त पहले अक्षर पर होता है, अन्यथा इस पर उदात्त नहीं होता।

(ii) मुख्य क्रिया के अतिरिक्त अन्य क्रियाओं पर उदात्त होता है।

(iii) यदि मुख्य क्रिया वाक्य या पाद के प्रारम्भ में आवे तो उस पर उदात्त होता है।

(iv) सम्बोधन के तुरन्त बाद क्रिया आवे तो उस पर भी उदात्त होता है—अग्ने जुषस्व।

(v) जब क्रिया जोर देने के लिये हो तो उस पर भी उदात्त होता है भले ही वह वाक्य के प्रारम्भ में ही न हो।

(vi) जब उपवाक्य 'य' या 'य' के अन्यरूपों से शुरू हो और च, चेद्, नेद्, कुविद् अव्यय हों तो उसकी क्रिया पर उदात्त होगा।

उपसर्गों में—(In Verbal Prepositions)

(i) मुख्य वाक्य में उपसर्ग पर उदात्त होता है।

(ii) दो उपसर्ग हों तो दोनों स्वतन्त्र और उदात्तयुक्त होते हैं—उप प्र याहि।

(iii) आ के पहले कोई उपसर्ग हो तो 'आ' उदात्त होगा—समाकृणोषि।

(iv) उपवाक्यों में उपसर्ग क्रिया के साथ प्रायः जुड़ा रहता है और उदात्त-रहित होता है।

(v) जब दो उपसर्ग हों तो या तो दोनों जोड़ दिये जाते हैं उदात्तरहित होता है या पहले को पृथक् करके उदात्तयुक्त कर देते हैं। परि–प्र–याथ, अभि सनंवामहे।

स्वरित उदात्त उस स्वर को कहते हैं जिसके उच्चारण में गात्रों को ऊपर खींचा जाय। गात्रों के अधोगमन पर अनुदात्त और तिर्यग्गमन पर स्वरित होता है। इन स्वरों का व्यंजनों से सम्बन्ध नहीं है। उदात्त और अनुदात्त के मिलने से स्वरित बनता है (उदात्तानुदात्तौ स्वरौं तयोः स्वरितः स्वरो निष्पद्यते) (पाणिनि—समाहारः स्वरितः) 'एकाक्षरसमावेशे पूर्वयोः स्वरितः स्वरः'। स्वरित मुख्य दो प्रकार का होता है।

(i) सामान्य Dependent—जो स्वरों की सन्धि पर निर्भर होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(ii) जात्य Independent—जो स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है।

सामान्य Dependent स्वरित के अन्तर्गत निम्न स्वरित आते हैं—

(i) उदात्त के बाद अनुदात्त आवे तो अनुदात्त को स्वरित हो जाता है। अग्निभिः में 'ग्नि' का ःई उदात्त था, और भिः का 'ई' अनुदात्त, अतः 'भि' पर स्वरित हो गया है।

(ii) अभिनिहित सन्धि होने पर जब स्वरित बनता है तो वह अभिनिहित स्वरित होता है। उदात्त ए ओ के बाद अनुदात्त 'अ' आवे तो अभिनिहित स्वरित होता है। ते अवर्धन्त = तेऽवर्धन्त।

(iii) क्षैप्रसन्धि होने पर क्षैप्रस्वरित होता है। उदात्त इ, उ, ऋ के बाद जब अनुदात्त भिन्न स्वर हों तो स्वरित होता है। नु + इन्द्र=न्विन्द्र।

(iv) प्रश्लेष सन्धि में उदात्त इ के बाद अनुदात्त इ आवे तो स्वरित ई होता है। सुचि + इव=सुचीवं। (इकारयोश्च प्रश्लेषे)।

(v) जात्य स्वरित (Independent) जिस स्वरित के पहले उदात्त न हो उस स्वरित को जात्य स्वरित कहते हैं। (स्वरूपेणैवोदात्तानुदात्तसंगतिं बिना जातो जात्यः। स्वः। कन्या में।

ऊपर के स्वरित उदात्त + अनुदात्त से बनने वाले हैं तथा पाँचवाँ जात्य स्वरित है। इसके अतिरिक्त स्वरों (Accents) की निम्न सन्धियों को समझ लेना चाहिये।

स्वरों की सन्धि

(i) उदात्त के बाद उदात्त की सन्धि हो तो उदात्त होता है। उ + उ = उ।

(ii) अनुदात्त के साथ उदात्त, उदात्त होता है। अ + उ = उ।

(iii) स्वरित के साथ उदात्त की सन्धि होने पर उदात्त। स्व + उ = उ।

(iv) जात्य स्वरित + उदात्त = उदात्त।

प्रचय

प्रचय—उदात्त, अनुदात्त, स्वरित के अतिरिक्त 'प्रचय' भी एक स्वर होता है। इस पर भी कोई चिह्न नहीं होता। उदात्त एवं प्रचय में इस कारण पहचान करने में कठिनाई होती है।

(i) अनुदात्त के बाद जो चिह्न रहित वर्ण हों उन्हें उदात्त और

(ii) स्वरित के बाद जो चिह्नरहित वर्ण हो उन्हें प्रचय समझना चाहिये (स्वरितादनुदात्तानां परेषां प्रचयः स्वरः उदात्तश्रुतितां यान्त्येकं द्वे वा बहूनि वा)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

स्वरित के बाद कई वर्णों को प्रचय हो सकता है। स्वरित के बाद जिस वर्ण पर अनुदात्त का चिह्न—लगा हो उसके और उस स्वरित के बीच के सभी वर्ण प्रचय समझना चाहिए यथा 'त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुस्य' में क के बाद सु तक सभी स्वर प्रचय हैं। वाक्य के अन्त में जब स्वरित के बाद कई प्रचय रहते हैं तो उन्हें विना चिह्न के छोड़ देते हैं और अन्त के अनुदात्त को भी चिह्नित नहीं करते। इमं मे गंगे यमुने सरस्वति। पदपाठ में इन प्रचयों को अनुदात्त रूप में व्यक्त करते हैं इसे अंग्रेजी में accumulation कहते हैं।

कम्प—जात्य, अभिनिहित, क्षैप्र एवं प्रश्लिष्ट स्वरित के बाद जब कोई उदात्त आता है तो कम्प होता है।

जब जात्यस्वरित ह्रस्व स्वर पर हो तो कम्प को स्वरित एवं अनुदात्त युक्त १ से व्यक्त करते हैं क्व १ त्री।

जब दीर्घ स्वर पर हो तो स्वरित एवं अनुदात्त युक्त ३ चिह्न से—तन्वा ३ संवदे

[जात्योऽभिनिहतश्चैव क्षैप्रः प्रश्लिष्ट एव च।
एते स्वराः प्रकम्पन्ते यत्रोच्चस्वरितोदयाः ॥]

इसके अतिरिक्त—

(i) उदात्त के बाद अनुदात्त आवे और उसके बाद उदात्त या स्वरित न आवे तो अनुदात्त को स्वरित होता है। गणपतिम् में ण उदात्त है प अनुदात्त, ति अनुदात्त। अतः प पर स्वरित होगा।

(ii) उदात्त के बाद जब अनुदात्त हो तो वह प्रचय नहीं होता, अनुदात्त ही रहता है और उस पर—चिह्न लगाते हैं वह स्वरित नहीं होता है। इस नियम का ध्यान संहिता पाठ से पदपाठ बनाते समय रखना चाहिये।

संहिता पाठ से पद-पाठ बनाने के नियम

(१) सन्धिविच्छेद—

(i) संहिता पाठ की स्वरसन्धियों को पहले अलग-अलग कर लेना चाहिये जैसे इन्द्रेहि = इन्द्र + आ + इहि। प्रोत = प्र + उत। एमसि = आ + ईमसि। रथेभ्योग्ने = रथेभ्यः + अग्ने। यइन्द्रः = यः + इन्द्रः। कईषते = कः + ईषते।

(ii) स्वरसन्धियों के साथ साथ व्यञ्जनसन्धियों को भी अलग कर लेना चाहिये। शब्दों को सन्धि के पूर्व की अवस्था में रख देना चाहिये। जैसे आरेक्प-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

न्थाम् = आरैक्+पन्थाम्। अर्वान्नँरा = अर्वाक्+नरा। विपाट्च्छुतुद्री = विपाट्+शुतुद्री।

(iii) जिस विसर्ग को 'ओ' लोप, 'रे' या 'स' या 'ष' हुआ हो उस शब्द को मूल विसर्गयुक्त अवस्था में रख देना चाहिये।

देवो देवेभिः = देवः+देवेभिः। प्रातरिन्द्रं = प्रातः+इन्द्रम्।

यस्ककुभः = यः+ककुभः, निष्टनिहिः = निः+स्तनिहि।

(२) मूर्धन्य परिवर्तन—

संहिता पाठ के 'ष्' को 'स' और 'ण' को न् कर देना चाहिए–ऊती ष बृहतः = ऊती। सः। बृहतः।

तुविष्वणि = तुविऽस्वनिः।

(३) लुप्त वर्ण को रखना

कहीं-कहीं संहिता पाठ में कुछ वर्णों का लोप हो जाता है विशेषकर 'इम्' के 'म्' को और द्विवचनान्त शब्दों के 'आ' का लोप हो जाता है। पदपाठ में इन्हें लगा लेना चाहिये।

यम् ई गर्भम् = यम्। ईम्। गर्भम्।

इन्द्रावरुण न्द्र नु वाम् = इन्द्रावरुणा। नू। तु वाम्।

धृतव्रत मित्रावरुण = धृतव्रता। मित्रावरुणा।

(४) अवग्रह का प्रयोग—

(i) शब्दों के साथ लगी कुछ विभक्तियों को अलग करने के लिए मूल शब्द एवं विभक्ति को अलग कर देते हैं एवं उसके बीच अवग्रह 'ऽ' चिह्न लगा देते हैं। 'भ्' से शुरू होने वाले विभक्ति चिह्न (भ्याम्, भिस्, भ्यस्) को शब्द से अलग कर देते हैं यदि उस शब्द के अन्त में ह्रस्व स्वर हो। यथा—

हरिभ्याम् = हरिऽभ्याम्। चतुर्भिः = चतुःऽभिः। स्तोतृऽभ्यः। स्तोतृभ्यः = पतिभ्यः = पतिऽभ्यः। किन्तु द्वाभ्याम्, अष्टाभिः देवेभ्यः में अवग्रह से अलग नहीं करते हैं। 'अस्मभ्यम्' और 'तुभ्यम्' में भी विभक्ति चिह्न अलग नहीं किये जाते।

(ii) जब सप्तमी बहुवचन का विभक्ति चिह्न 'सु' को षु नहीं हुआ हो और न उसके पहले दीर्घ स्वर हो तो शब्द से अलग कर देते हैं।

(iii) उपसर्ग जब शब्द से मिले हों तो उन्हें अलग कर देते हैं। प्रचेताः = प्रऽचेताः। विभुः = विऽभुः।

(vi) शब्दों के बाद लगने वाले प्रत्ययों को अलग कर देते हैं। वृत्रहा = वृत्रऽहा। ऋतुथा = ऋतुऽथा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(v) नकारात्मक अर्थ वाले 'अन' और 'अ' उपसर्ग अलग नहीं किये जाते हैं।

(vi) यदि एक शब्द में एक से अधिक उपसर्ग लगे हों तो पहले वाले उपसर्ग को ही अवग्रह द्वारा पृथक् करते हैं। सुप्रवचनम् = सुऽप्रवचनम्। इसके अपवाद भी मिलते हैं।

(vii) किसी शब्द के साथ जब 'इव' लगा हो तो 'इव' को ही अवग्रह लगाकर अलग करते हैं यदि ऐसे शब्द के पहले उपसर्ग भी लगा हो तो उसे अवग्रह द्वारा अलग नहीं करते हैं। प्रगर्धिनीइव = प्रगर्धिनीऽइव।

(viii) समास के बने पदों को अवग्रह द्वारा अलग-अलग कर दिया जाता है और समास होने से वर्णों में जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हें मौलिक रूप में कर देते हैं। पुरूवसु = पुरुऽवसु।

(ix) जिस समास का पहला पद 'द्वा' हो उस 'द्वा' को अलग नहीं करते हैं—'द्वादश'। 'वनस्पति' समास को अलग नहीं करते हैं।

(५) इतिकरण—

प्रगृह्य स्वरों से समाप्त होने वाले शब्दों के आगे पदपाठ में 'इति' लग जाता है।

(i) 'ई' जब प्रथमा, द्वितीया का द्विवचनान्त हो या सप्तमी में हो तो प्रगृह्य होता है। इन द्विवचनान्त शब्दों या सप्तमी के रूप के बाद 'इति' लगता है पती = पती इति। रोदसी = रोदसी इति। सरसी = सरसी इति।

(ii) 'अमी' के ई को भी प्रगृह्य होता है।

(iii) द्विवचनान्त या सप्तमी में जब शब्द के अन्त में ऊ हो तो उसके साथ भी इति लगता है। इन्द्रवायू इति। घृ॒ण्णू इति। चमू इति।

(iv) 'उ' के स्थान पर पद पाठ में 'ऊँ इति' हो जाता है।

(v) जब द्विवचनान्त शब्द के अन्त में 'ए' आये तो उसे भी प्रगृह्य होता है और पदपाठ में उसके साथ भी 'इति' लगता है। अबुध्यमाने = अबुध्यमाने इति।

(vi) जब 'ए' द्विवचनान्त क्रियारूप के अन्त में आवे तो उसके बाद भी 'इति' होता है—दधाते इति।

(vii) अस्मे, युष्मे, त्वे के बाद 'इति' होता है।

(viii) जब सम्बोधन के अन्त में 'ओ' आवे तो उस शब्द के बाद इति होता है—विष्णो = विष्णो इति।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

(ix) जब 'ओ' स्वयं स्वतन्त्र शब्द हो तो उसके बाद इति होता है—ओ इति।

(x) अथो, उतो, यहो, तत्वो, भो के 'ओ' के बाद भी 'इति' लगता है।

(xi) होतर् और नेष्टर् आदि शब्दों के विसर्ग होने के पहले मूल रूप में रहा हो उसके बाद इति लगता है, होतरिति।

(xii) समासयुक्त पद के अन्त में जब 'ई' या 'ऊ' आवे तो उस पद के बाद भी इति होता है। द्रवत्पाणी इति द्रवत्पाणी वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू।

(xiii) ईकारान्त एवं ऊकारान्त शब्द के बाद 'इव' आवे तो उस शब्द के इव के साथ इति लगता है और दुहराया जाता है। हरी इव इति हरीऽइव। दम्पती इव इति दम्पतीऽइव।

(xiv) स्युः और 'अकः' आदि शब्दों के बाद इति लगाकर दुहरा देते हैं अकरित्यकः इति अकरित्यकः।

(६) दीर्घ-स्वर को ह्रस्व करना—

प्लुति के कारण जहाँ स्वर दीर्घ हुए हों उन्हें ह्रस्व कर दिया जाता है—अच्छा-वद = अच्छवद। मक्षूमक्षू कृणुहि = मक्षुऽमक्षु कृणुहि।

(७) विवृति के व्यवधान को दूर करने के लिए लगाये गये अनुस्वार को हटा दिया जाता है। शाशदानाँ एषि = शाशदान एषि।

(८) कहीं-कहीं शब्दों के क्रम को भी बदलना पड़ता है।

शुनश्चिच्छेपम् = शुनःशेपम् चित्। नरावा शंसम् = नराशंसम् वा। नरा च शंसम् = नरा शंसम् च।

(९) स्वरचिह्न लगाना (Marking of Accents)

निहत = जिन पर चिह्न नहीं लगा रहता है ऐसे उदात्तरहित स्वर।

संहितापाठ में	पद पाठ में
अनुदात्त के बाद अनुदात्त	कोई परिवर्तन नहीं
अनुदात्त, अनुदात्त, उदात्त	,, ,, ,,
उदात्त, उदात्त उदात्त,	उदात्त, अनुदात्त, उदात्त
उदात्त, निहत	उदात्त, स्वरित
उदात्त, निहत, निहत	उदात्त, स्वरित, प्रचय
उदात्त, निहत, निहत, निहत	उदात्त, स्वरित, प्रचय, प्रचय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

उदात्त, नि, नि, उ	उ, स्व, अ, उ.
उ, नि, नि, नि, उ	उ, स्व, प्र, अ, उ.
उ, नि, नि, नि…नि उ	उ, स्व, प्र, प्र, अ, उ.
उ, जात्यस्वरित, अ, अ, जा	कोई परिवर्तन नहीं
उ, नि, जात्यस्वरित,	उ, अ, जा
जात्यस्वरित, निहत	जा, प्रचय

(i) स्वरों के लगाने का क्रम एक अर्धर्च (मन्त्र के आधे भाग) तक चलता है जहाँ तक कि दो खड़ी लकीर द्वारा अर्धर्च की समाप्ति की सूचना न मिले।

(ii) पदपाठ में एक-एक शब्द स्वतन्त्र हो जाते हैं अतः स्वराङ्कन के सम्बन्ध में उस शब्द का किसी दूसरे के साथ सम्बन्ध नहीं रहता है। प्रत्येक शब्द के बाद खड़ी लकीर लगाई जाती है।

(iii) उपर्युक्त नियमों के आधार पर पदपाठ से संहितापाठ भी बनाया जा सकता है, केवल क्रिया में परिवर्तन होगा। अलग-अलग करने के स्थान पर जोड़ा जायगा, सन्धियाँ होंगी एवं स्वराङ्कन आगे पीछे के शब्दों के स्वरों को देखकर किया जायगा।

(iv) पाठ्यपुस्तक में संहितापाठ एवं पदपाठ दिये हुए हैं। विद्यार्थी संहितापाठ को देखकर पदपाठ बनाकर दिये गये पदपाठ से मिलाकर स्वयं अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं एवं इसी प्रकार पदपाठ से संहितापाठ बनाकर स्वयं तुलना करके नियमों को पूरा समझ सकते हैं। अभ्यास आवश्यक है।

आचार्यों ने स्वर को वैदिकभाषा का अत्यन्त अनिवार्य अंग माना है। इससे अर्थ के निर्धारण में सहायता मिलती है, यज्ञ तथा अनुष्ठानों में स्वर के साथ मन्त्रों के उच्चारण से ही अभीष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट की शान्ति मानी गयी है।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

अनुक्रमणिका

पाणिनि-प्रज्ञा-अनु... 2420

धातुरूपों का उदाहरण

क्रियाओं के कुछ रूप नीचे दिये जाते हैं—

PRESENT (वर्तमान काल)

Subjunctive (लेट् लकार भाव)—दाशात्, अर्हात्, अर्षात्, प्रशंसात्, पचात्, बृहतात्, रक्षतात्, सर्पात् । अश्नवत्, दीदयत्, चिनवत्, जुजोषत्, (जुष), कृणवत्, सुनवत् । असत् । शृण्वन्, सदन्, घोषान् । पताति । ऋणवः, ब्रवः, तृप्णवः (तृपः), असाम, ब्रवाम, शृणुयाम । चरातै ।

Injunctive—उच्छत्, ईशात्, बोधत् (बुध), भिनत्, क्षिपत्, जनत्, रुवत्, रेजत, मन्वत, दधर्षीत । कृणोतन । नसन्तः । वृश्चः, वेः । अर्चन ; अवोचम् ।

Optative (विधिमूलक)—आजुहोत, चरेत, ईशीत । स्याम, हुवेम, विद्याम, रुजेम, दाशेम । वृणताम्, धत्ताम्, धत्तम् । मादयेथाम् । वोचेय, पश्येः, स्याः । हन्यात् । ददीमहि, जायेमहि ।

Imperative (लोट् लकार भाव)—मृलय, म्यक्ष । यातम्, जरताम्, यच्छतात्, ओषतात् । मिमिक्ष्व, वृङ्क्ष्व, आवृषस्व, जुषस्व, रोचस्व, जिन्व । नमध्वम्, पिनध्वम्, पृणध्वम्, रमध्वम् । भाहि, गृणीहि, वीहि, तनुहि, कृणुहि, गृणुहि, धेहि, विहि, इहि, याहि, पाहि, शाधि, एधि ।

Imperfect (लङ् लकार)—अभिनत्, अकिरत्, अजोहवीत्, असृजत्, अभजत्, अगृभ्णत्, आवत्, आजनम्, अवेनत्, अदाशत्, अधमत् । अजहात्, अहन्, क्षरन्=अक्षरन्, असर्पयन्, अकृण्वन् । अभवः, अजयः, असृजः, औब्जः, अरुजः, अरदः, दर्दः, अपिबः, एनोः, रिणाः, अमिनाः, अवस्थाः । अयातम्, अरदतम् । अधत्तम्, श्रुतम्, अतिरतम् । वस्त, जुषत, अवृणीत, अमुञ्चत, अदत्त । अकृणोत, ऐत, अतष्ट, अरिणीत । अवारयेथाम्, अनुदेथाम्, ऐरयम्, धारयम्, अपिन्वम् । अतर्पय, पिणक् ।

PERFECT (लिट् लकार)

वेद, ससाद, चकार, ततर्द, ततक्ष, जघान, जभार, ववार, सिसेध, उवास, ननाम, जिगाय, उवाच, उवाह, ववर्ह, विवेद, विवेष, जजान, ससार, पीपाय,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

इत्याय, ररक्ष, दधाथ, विवेद, रुरोज, ममतुः । वव्रृतुः । तितिरुः, युयुधुः, येमुः, देमुः, दद्रुः, ययुः, पप्तुः, शशासुः, आनशुः (अश), रुरुचुः, जग्मुः । ऊहथुः, ददथुः, निन्यथुः, उपथुः, वितस्थुः, पिप्यथुः, सेदथुः । सेदिरे, दधिरे, दध्रिरे (Passive), जुहूरे, जगृभिरे । चक्रे, चके, पिपिषे, विवित्से, युयुधाते, जिग्ये, विविप्रे, सिसिचे, चक्रथे, चिच्युषे, ददे, पेचे, ततन्रे । जभर्थ, ववक्षिथ उहयाथे । चकरम्, जगन्म ।

Optative—जगम्याम्, ववृत्याम्, पपृच्यात्, रिरिच्यात् ।

Subjunctive—शश्वचै, ततपते, जभरत्, जुजोषत्, तततन् ।

Injunctive—पीयेः ।

Imperative—जुजुष्टन्, चिकिद्धि, मुमुग्धि ।

Pluperfect—अमुमुक्तम्, अववृत्रम्, अचिक्रदत्, अविवेशीः, अचकत् चक्रपन्त ।

AORIST (लुङ् लकार)

S Aorist अदृक्षत, अनूषत, वियोषत्, अचौत्, अस्राक् । अयान् । अहाः, अयासम्, नंसै । sa Aorist मृक्ष ।

Is Aorist अयोधीत्, अस्वनीत्, अक्रमीत्, अतारीत् । तारिणीमहि, अतारिष्म । Subj. तारिषत् । Inj. सावीः, वधीः, वर्हीः, रन्धीः । Optative जनिषीष्ट ।

Root Aorist अहूषत्, अगात्, अधात्, अभूत्, आगात्, गमत्, आर्त, अगुः, Subjunctive धात्, करत, भुवत्, करामह, Injunctive भूत, कः मृणः जन्म, निकर्म, विदःप्रणक्, धाः, असाम, अवस्थाम् Imperative श्रुधि, बोधि, कृधिः, आगहि । वृक्ष्व, यक्ष्व, अर्त, Optative ऋध्याम ।

A Aorist. मुचाति Inj, अव्यत्, अरण्यत्, अवृधत्, धत्,ः सरत्, असरत्, आरत् । आरन्, ग्मन् । अक्रत । सदतम्, अरम्, भुजेम ।

Reduplicated Aorist—रीरधः Inj. पीपरः शिश्रथः पीपरत्, योषत्, करीरमत्, नेशत् । वोचम्, अवोचम्, वोचावहै ।

Passive Aorist—अकारि, अवेदि, अबोधि, अदर्शि, अवाचि, अश्रायि, अधायि ।

PARTICIPLES. (कृदन्त)

Present—इच्छन्ती, जरन्ती ।

Past—आभृतम्, अपिहितः, अवनंद्धः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Perfect—दध्वांस, ईयिवांस, वव्रिवांस, शिश्रिवांस, शिश्रियाणः, जर्भुराणः, युयुजानः, चक्षदानः, बुबुधाना, जुषाणाः, जगृन्वान, येमान ।

Causative—वर्हय, अर्दय, ईरय, सपर्यत्, अपारयत्, प्रथयत् । असादयन्त, अजनयन्त, मादयस्वः, मर्जयेम, धारये, अरमयः, अश्याम ।

Desiderative—श्रवस्य, अस्मयुम्, जिगीषुः ।

Intensive—मर्मृज्यते, रोरवीति ।

Denominative—वृषयभाण, पतयति, रघुया, वाजयन्त, मुषायः, ऋधायतः ।

Infinitive—ईरयध्यै, शुचध्यै, सर्तवे, एतवे ।

२५२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative